₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०७५ जनवरी २०१९

दृष्टि The Vision

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक परीक्षा)
(20 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन
(मुख्य परीक्षा)
(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रारंभिक परीक्षा)
(20 + 9 = 29 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(31 + 3 + 8 = 42 बुकलेट्स) ₹17,500/-

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

इतिहास (वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय)
₹6,000/-

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(32 + 10 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(32 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन (प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

For UPSC CSE (in English Medium)

Self Learning Modules

- Prelims (18 GS + 3 CSAT Booklets) ₹10,000/-
- Mains (18 GS Booklets) ₹11,000/-
- Prelims + Mains (36 GS + 3 CSAT Booklets) ₹15,000/-

Invitation Offer

- *Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine with every module.*
- *Free Test Series worth ₹6000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims+Mains module.*
- *Flat 50% discount on Test Series worth ₹6000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims/Mains module.*

हिन्दी साहित्य

(2014 के बाद पहला लाइव बैच)
द्वारा डॉ. विकास दिव्यकीर्ति
ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ **3 दिसंबर**
प्रातः 11:30 बजे

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ
11 दिसंबर
प्रातः 11:30 बजे

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485519, 8448485520, 87501-87501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

पौष २०७५ ▪ वर्ष ३९
जनवरी २०१९ ▪ अंक ७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

आज आपका परिचय मेरे एक अभिन्न मित्र से करवाना चाहता हूँ। यह इच्छा इसलिए हो गई कि पिछले दिनों समाचार पत्रों में एक समाचार पढ़कर हृदय तार-तार हो गया। एक १२वीं कक्षा के विद्यार्थी ने केवल इसलिए आत्महत्या कर ली कि परीक्षा से पूर्व दुर्घटना में उसका हाथ फ्रेक्चर हो गया था। परीक्षा परिणाम बिगड़ जाने के भय से ही उसने यह दुर्भाग्यशाली कदम उठाया था। यह पढ़कर मुझे लगा कि आप सबको मेरे उन मित्र से अवश्य मिलवाना चाहिए जिनके संपर्क में मैं आया हमारी संस्था 'सक्षम' का कार्य करते हुए। विवेक जी तरुण हैं अभी उम्र के ४० से अधिक बसंत देखे हैं। बाल्यकाल की एक दुर्घटना में उनके दोनों हाथ दुर्घटनाग्रस्त हो गए। गेंग्रीन के कारण दोनों हाथ बिलकुल कंधों के पास से काटना पड़े। लेकिन इस पूरी यंत्रणा से लड़कर जो विक्रम बाहर निकले, वे तपकर निकले खरे सोने से थे। आखिर एक सैनिक की संतान थे तो इस लड़ाई में हारते भी कैसे? आत्मविश्वास इतना कि उनसे मिलने वाला स्वयं को ऊर्जा से भरपूर पाता है। विक्रम अग्निहोत्री आज लाखों तरुणों के प्रेरणा स्रोत हैं। स्वयं का व्यवसाय है। उनके प्रमुख शौक हैं फुटबॉल और स्केटिंग। आप सब यदि यह सोच रहे हैं कि विक्रम भैया मोबाईल कैसे चलाते होंगे तो आप बहुत छोटी बात सोच रहे हैं। वे अपनी कार भी बहुत अच्छी चलाते हैं और वह भी इन्दौर के अस्त व्यस्त यातायात में। अपने पैरों से स्टेयरिंग सम्हाले और पैरों से ही फटाफट गियर बदलते और ब्रेक लगाते विक्रम जी को देखना किसी रोमांच से कम नहीं होता।

समस्या तो तब आई जब आर.टी.ओ. ने उन्हें ड्रायविंग लायसेंस देने से मना कर दिया। विक्रम भैया की आत्म विश्वास से भरी एक लंबी सैद्धांतिक लड़ाई के बाद अंततः प्रशासन को ही झुकना पड़ा। अब वे लाइसेंस प्राप्त कुशल चालक हैं।

मुझे कष्ट केवल इस बात का है कि केवल फ्रेक्चर हो जाने के कारण आत्महत्या कर लेने वाला वह बच्चा काश एक बार विक्रम भैया से मिल लेता।

आइए, हम सब भी प्रेरणा लें उनसे और संकल्प करें जीवन में कितनी भी चुनौतियां आए उनका डटकर मुकाबला करेंगे।

देवपुत्र परिवार की ओर से विक्रम जी को प्रणाम। ईश्वर उनके आत्मविश्वास का कुछ अंश हमें भी दे।

(चित्रमय झलकियाँ पृष्ठ ६ पर)

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- मीठा मीठा बोलो - डॉ. सेवा नंदवाल ०५
- दान का महत्व - स्वाती श्रोती ०९
- लाल और काली पतंग - नरेन्द्र देवांगन २०
- टुनकी बिल्ली और... - इन्जी. आशा शर्मा ३८

लघु कथा

- नीली पतंग - मीरा जैन १९

आलेख

- स्वामी विवेकानंद... - लालमणि सिंह चौहान १२

कविता

- उलझा ताना बाना - राजेन्द्र निशेश ०८
- भारत हो वैभवशाली - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ११
- निडर क्रांतिकारी सुभाष - आचार्य भगवत् दुबे १९
- तनिक न लगे रुपैया - डॉ. राकेश चक्र २६
- आओ चलें भ्रमण... - सोमदत्त त्रिपाठी ३६
- राष्ट्रीय बालिका दिवस - डॉ. प्रीति प्रवीण खरे ४१
- चुन्नू-मुन्नू की पतंग - दिनेश विजयवर्गीय ४३

बाल प्रस्तुति

- सहायता - शुभम् वैष्णव ३३
- नन्हा सैनिक - कु. हर्षिता यदु ३५
- आओ हँस लें -कु. निष्णा बनर्जी ४७

जानकारी

- सात से विभाज्य.... - वि. के. डांगे २२

चित्रकथा

- परेड की तैयारी - देवांशु वत्स १५
- दन्त कथा - संकेत गोस्वामी २८
- कैसा चूहा? - देवांशु वत्स ४२

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १०
- गाथा वीर शिवाजी की (२४) - १६
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा' २४
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २७
- आपकी पाती - ४४
- पुस्तक परिचय - ४६

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है-

खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**

बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**

खाता क्रमांक - **53003592502**

IFSC- SBIN0030359

राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।

नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।

उदाहरण के लिए -

सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -

"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM** " आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

मीठा मीठा बोलो

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

अवनी और वीर में पता नहीं किस बात पर तीखी बहस शुरु होकर वाक्युद्ध होने लगा। अवनि की जुबान कैंची सी चल रही थी ''तू अपने आपको समझता क्या है? एक थप्पड़ लगाऊंगी तो दिन में तारे नजर आने लगेंगे।'' वीर को यह धौंस भला कब सहन होती ''जा जा बहुत देखे हैं जरा हाथ लगाकर तो दिखा।'' अवनी बिफर पड़ी ''देखा मेरे पिताजी...''

तब तक अवनी की माँ गरिमा वहां पहुंच गई– ''चुप क्या हो रहा हैं यहाँ? ''माँ ये वीर झगड़ रहा है मुझसे'' अवनी ने शिकायत की। '' नहीं बड़ी माँ, शुरुआत इसी ने की'' वीर ने सफाई पेश की।

''तुम दोनों की जुबान बहुत चलने लगी है, भाई–बहन इस तरह झगड़ते हैं क्या? पता है भगवान ने जुबान क्यों दी है?'' गरिमा ने आक्रोशपूर्वक पूछा। ''एक दूसरे से बातें करने के लिए'' अवनी झट से बोली। ''लेकिन तुम लोग तो जुबान लड़ा रहे थे जोर जोर से, अनापशनाप बक रहे थे।''– गरिमा ने उलाहना दिया। बात सत्य थी इसलिए दोनों बच्चों की गर्दन झुक गई।

''मालूम है आज कौन सा पर्व है?'' गरिमा ने पूछा। ''मकर संक्राति''– अवनी ने तत्परता से बोला। ''तुम्हें यह भी पता होना चाहिए कि हमारे प्रत्येक पर्व के साथ कोई न कोई अच्छा संदेश जुड़ा होता है'' गरिमा बोली। ''हाँ बड़ी माँ पता है'' वीर ने धीमे से कहा। ''पता है तो बताओ इस मीठे पर्व के साथ क्या संदेश जुड़ा है?'' अवनी ने फिर छेड़खानी की। ''तू बता न बड़ी होशियार बनती है'' वीर कहाँ पीछे रहने वाला था।

''तुम फिर शुरु हो गए। मुझे लगता है तुम दोनों को कुछ पता नहीं...थोथा चना बाजे घना... मकर संक्रांति का पावन पर्व मीठी रसयुक्त वाणी बोलने का संदेश देता है याने वाणी की शीतलता और मिठास का पर्व है यह'' गरिमा ने समझाया। ''इसका मतलब क्या हुआ माँ?''अवनी ने जानना चाहा।

''बात गुड़ की मिठास से लेकर उसे वाणी के रस में भिगोने की है। पारिवारिक संबंधों में मिठास बहुत जरुरी तत्व हैं। उस रस का प्रवाह जब रुकता है तभी संबंधों में दरार आती है। वाणी तभी कटु होती है

जब मन में परस्पर अविश्वास हो, ईर्ष्या–द्वेष हो'' गरिमा ने समझाने की चेष्टा की।

''इसलिए कहा जाता है कि हमेशा मीठा बोलना चाहिए'' वीर ने समझदारी का प्रदर्शन किया। ''हाँ बेटा और पता है हमारे शरीर का सबसे ताकतवर अंग कौन सा होता है?'' गरिमा ने पूछा। ''हथौडे–से हाथ'' हवा में हाथ लहराते वीर ने बताया। ''नहीं छुरी–सा तेज दिमाग''– अवनी ने बताया।

''गलत–गलत। हमारे शरीर का सबसे ताकतवर हिस्सा होता है वही संदेश वाहक, एक साधारण–सा डेढ़ इंच का माँस का टुकड़ा जो चलता है तब या तो मरहम लगाता है या छुरी तलवार की तरह बहुत तीखा काटता है। बूझो क्या है वह?'' गरिमा ने पहेली की तर्ज में पूछा।

''जुबान'' दोनों बच्चे एक साथ बोल पड़े। ''हाँ और इसीलिए बच्चो! आज के दिन तिलगुड़ बांटकर महाराष्ट्रीय लोग कहते हैं ''तिल गुड़ घ्या आणि गोळ गोळ बोला''गरिमा ने बताया। ''और सिक्ख लोग कहते हैं ''पूरे वरहे मिट्ठा मिट्ठा बोलीं'' वीर ने आगे बढ़कर बताया। '' और तुम लोग क्या कहते हो...तुमको तो लड़ने झगड़ने से फुर्सत नहीं मिलती'' गरिमा ने हंसते हुए उलाहना दिया।

वीर हंसते हुए बोला– ''मैं...माफ कर दो अवनी दीदी– कहते हुए उसने कान पकड़ लिए। ''मुझे भी क्षमा कर दो वीर''– हंसते हुए अवनी बोली। ''अब चलो अंदर पूजा का समय हो रहा है''– गरिमा ने कहा तो दोनों बच्चे आज्ञाकारी–से अंदर को चल दिए।

– इन्दौर (म.प्र.)

चित्रमय झलकियाँ ...

दिव्यांगों की प्रेरणा : विक्रम अग्निहोत्री

अतिथि स्वरूप एक समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए।

व्यस्त मार्ग पर वाहन चलाते हुए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत के साथ।

पूरे जोश के साथ खेल के मैदान में।

सेमिनार में अभिवादन स्वीकारते हुए।

SURYA

Energising Lifestyles

आकर्षक **डिज़ाइन** » विश्व में सबसे अच्छी क्वॉलिटी के **प्रोडक्ट्स** » केवल एक ही नाम **सूर्या**

lighting

fans

appliances

pipes

SURYA ROSHNI LIMITED

E-mail: consumercare@sroshni.com I www.surya.co.in
Tel.: +91-11-47108000, 25810093-96

Toll Free No.: 1800 102 5657

/suryalighting I /surya_roshni

चित्र-विचित्र • राजेश गुजर

दोस्तो, दादा-पोते का यह चित्र हिन्दी के कौन-कौन से अंकों से बना है ध्यान से देखकर बताओ?

(उत्तर इसी अंक में।)

|| बाल गीत ||

उलझा ताना-बाना

कविता : राजेंद्र निशेश

ठिठुर-ठिठुर चिड़िया ने गाया
सरदी का इक गाना!
स्वेटर मे भी ठंडी लगती
गीदड़ जी ने माना!
छत पर बैठा कौआ दिखता
जैसे वह हो काना!
कोयल के आगे वह गाता
कैसा बेसुर गाना!
मोर बाग में नाच दिखाता
अपना छाता ताना!
ठिगनी नानी चादर बुनती
उलझा ताना-बाना!
सारे मौसम न्यारे होते
कहते प्यारे नाना!

–चण्डीगढ़

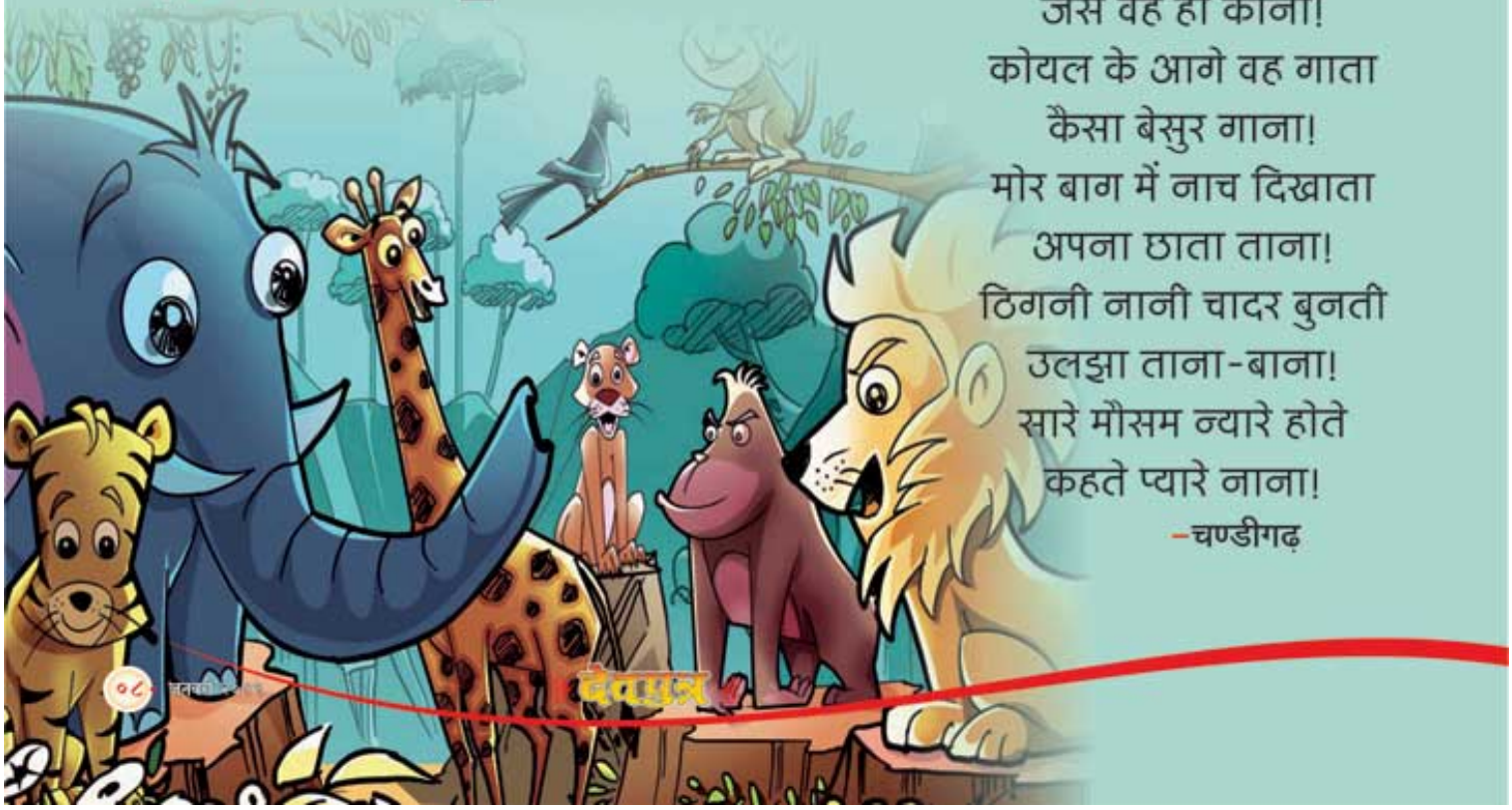

दान का महत्व

कहानी: स्वाती श्रोत्री

''अम्मा...अम्मा क्या है?'' कहते हुए रेवती कमरे से बाहर आयी। ''क्या है? बाबू..क्यों चिल्ला रहा है!'' ''अम्मा कल मकर संक्राति है ना, इसलिए कल मुझे खिचड़ी ले जाना है। मेरी दीदी ने मंगवाई है। अम्मा! दीदी ने यह खिचड़ी क्यों मंगवाई मुझे बताओ ना?'' ''हाँ हाँ बताती हूँ'' बाबू को गोद में उठाते हुए उसने कहा ''बेटा! इसे दान कहा जाता है और दान का अपना अलग महत्व है, देख मुझे अभी काम करना है, और तुझे भी गृहकार्य पूर्ण करना है, फिर जब फुरसत मिलेगी, तब तुझे एक कहानी सुनाऊँगी, चलो काम पर लग जाओ।''

रेवती एक ग्रामीण महिला थी। आठवीं तक पढ़ी थी, पर बहुत ही समझदार थी। उसके इस समझदारी की प्रशंसा गाँव का हर व्यक्ति करता था। दिनभर काम में व्यस्त होने पर वह कहानी वाली बात भूल गई। शाम को बाबू ने याद दिलाया तो वह कहने लगी ''अभी शाम का भोजन बनाती हूँ भोजन के बाद कहानी सुनाऊँगी।'' रात को बाबू ''कहानी सुनाओ, कहानी सुनाओं'' कहकर रेवती के कान खा गया। रेवती ने कहानी शुरु की...''एक गाँव था कहानी कहते कहते रेवती खो–सी गई।

बहन जी! खाने को दे दो बड़ी भूख लगी है ऐसा कहते कहते वह बूढ़ा व्यक्ति द्वार तक आ गया। सब जगह से खाली हाथ लौटने व झिड़की खाने के बाद वह बड़ी आस लगाये दरवाजे पर खड़ा हो गया। थोड़ी देर रुकने के बाद वह फिर बोला ''बहन जी! कुछ खाने को दे दो आपकी बड़ी कृपा होगी, दो दिन से कुछ खाया नहीं हैं, भूख से पेट सिकुड़ गया है। बेटी! रूखा सूखा जो भी हो खाने को दे दो'' कहते हुए बूढा वही सीढ़ी पर बैठ गया। घर के अन्दर से आवाज आयी– ''बाबा! बैठो अभी आती हूं।'' पति को खाना देने के पश्चात् वह युवती बाहर आई उसने बूढ़े को खाना दिया, मटके का ठण्डा पानी दिया। बूढे ने खाना खाया, पानी पीकर मानो उसमें शक्ति का संचार हुआ वह खुश होकर बोला– बेटी! आज तूने एक भूखे को खाना खिलाया, इसका तुझे अच्छा फल मिलेगा, दूधो नहाओ पूतो फलो।'' और न जाने कितने आशीर्वाद देते हुए वह वहाँ से चला गया।

तभी उसकी छोटी बहन की आवाज आई दीदी...वह दौड़ी दौड़ी ऊपर गई और देखा तो सन्न रह गई। उसकी बहन रो रही थी और बार बार कुछ कहना चाह रही थी बस ''मुन्ना...मुन्ना... नीचे'' उसके शब्दो को ध्यान से सुनकर समझती तब तक देर हो चुकी थी

और फिर वह बेहोश हो गई...

जब उसे होश आया तो देखा मुन्ना उसके पास बैठा खेल रहा था। तभी छोटी बोली ''दीदी! मुन्ना को आज पुनर्जन्म मिला।'' ''पर यह सब क्या हुआ?'' ''दीदी! मैं मुन्ने को लेकर छज्जे पर खड़ी थी, अचानक बाबू कुछ झपटने के लिए आगे उछला और मेरे हाथों से फिसलकर नीचे गिर गया। दीदी! भगवान का अजूबा देखो मुन्ने को एक खरोंच भी नहीं आई। ''इतनी ऊँचाई से गिरने के बाद भी मुन्ने को कुछ नहीं हुआ। पर यह कैसे संभव है ऐसा कैसे हुआ?''

''दीदी! जब मुन्ना फिसला, नीचे गिरा उसके कुछ पल पहले नीचे वाले शर्मा जी ने अपने गद्दे तकिये व रजाईयां लाकर धूप में डाल दी थीं। मुन्ना हमारा उस पर गिरा इसलिए बच गया। दीदी सब लोग यही कह रह थे कि किसी का प्रार्थना काम आ गई। वरना ऊँचाई से गिरने पर बच्चे की क्या हालत होती कह नहीं सकते। माँ की आँखों में वह बूढ़ा कौंध–सा गया। उसकी प्रार्थना ने असर दिखाया। सच में दान का महत्व क्या होता है? कितना महत्व होता है यह वह आज उसे समझ में आ गया था।

''हाँ, अम्मा! दान का बड़ा महत्व है। मुझे भी पता चल गया।'' बाबू की आवाज सुनते ही रेवती मानों सपने से जाग पड़ी ''चलो ना माँ अब सोयेंगे, पर कल सुबह मेरे लिए खिचड़ी निकालना मत भूलना।'' ''नहीं रे नहीं'' कहकर वह रसोई घर की तरफ जाने को मुड़ी तो दो हाथों ने पीछे से उसे पकड़ लिया उन दो नर्म हाथों की छुअन को अनुभव कर वह कुछ बोलती बाबू उसके कानों में बोला, ''अम्मा! वह छज्जे से गिरा, वह मुन्ना तेरा ये बाबू है ना?'' माँ ने ''हाँ'' कहा और खिचड़ी निकालने के लिए चल दी। उसके बेटे को दान का महत्व जो मालूम पड़ गया था।

– इन्दौर (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *दशरथनन्दन शत्रुघ्न किस माता के पुत्र थे?*
- *विराट नगरी में महारथी अर्जुन ने अज्ञातवास के समय कौनसा नाम रखा?*
- *इंग्लैण्ड के पड़ौसी एक देश में प्राचीन काल में श्रेष्ठ लोगों (आर्यों) का निवास था। इस देश का नाम अब क्या है?*
- *रामेश्वरम् में जिस स्थान से श्रीराम सेतु का बनना शुरु हुआ उस स्थान का नाम क्या है?*
- *देवताओं के गुरु कौन माने जाते हैं?*
- *दिल्ली में खुसरु खान ने स्वयं को हिन्दू सम्राट घोषित किया। कितने समय तक वह शासन कर सका?*
- *विष्णु स्तम्भ लोहे का एक ऊँचा स्तम्भ है जिसमें गत सोलह सौ वर्षों में जंग नहीं लगी है। यह स्तम्भ कहाँ है?*
- *वीर सावरकर की प्रेरणा से लंदन में कर्जन वॉयली का वध करने वाला क्रांतिकारी कौन था?*
- *चित्तौड़ के तीसरे साके के समय चित्तौड़ में स्थित सेना के सेनापति कौन थे?*
- *असम में पहला राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर कब बनाया गया था?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

भारत हो वैभवशाली

कविता : डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

सुन्दर है इस देश की धरती
सुन्दर इसकी हरियाली।
फूल खिले हैं रंग रंग के
साड़ी है शोभा शाली।।
लिये गोद में मुसकाती है
शिशु बसन्त को यह बाला।
वसन पहनकर नव पल्लव के
क्यारी की पहनी माला।
कहती शीतल मंद पवन है
सुख सुगन्धि लाने वाली।।
फूलों को हंसता देखा तो,
नभ में कोई मुसकाया।
भौरों ने भी अठखेली कर,
गुनगुन कर गाना गाया।
तितली सी नव बाला सुन्दर
रंग भरे पंखों वाली।।
स्वस्थ श्वेत बैलों की जोड़ी,
लिए कृषक मन फूल रहा।
भाँति भाँति की भाव कल्पना
में उसका मन झूल रहा।
गा गा कर लो फसल काटती
वासन्ती चूनर वाली।
जाने कितने मधु के निर्झर
धरती के उर से फूटे।
कटुता रह न सकेगी विष के
भरे हुये मटके फूटे।
इक लौ जले सभी के उर में
भारत हो वैभवशाली।।

– नोएडा (उ.प्र.)

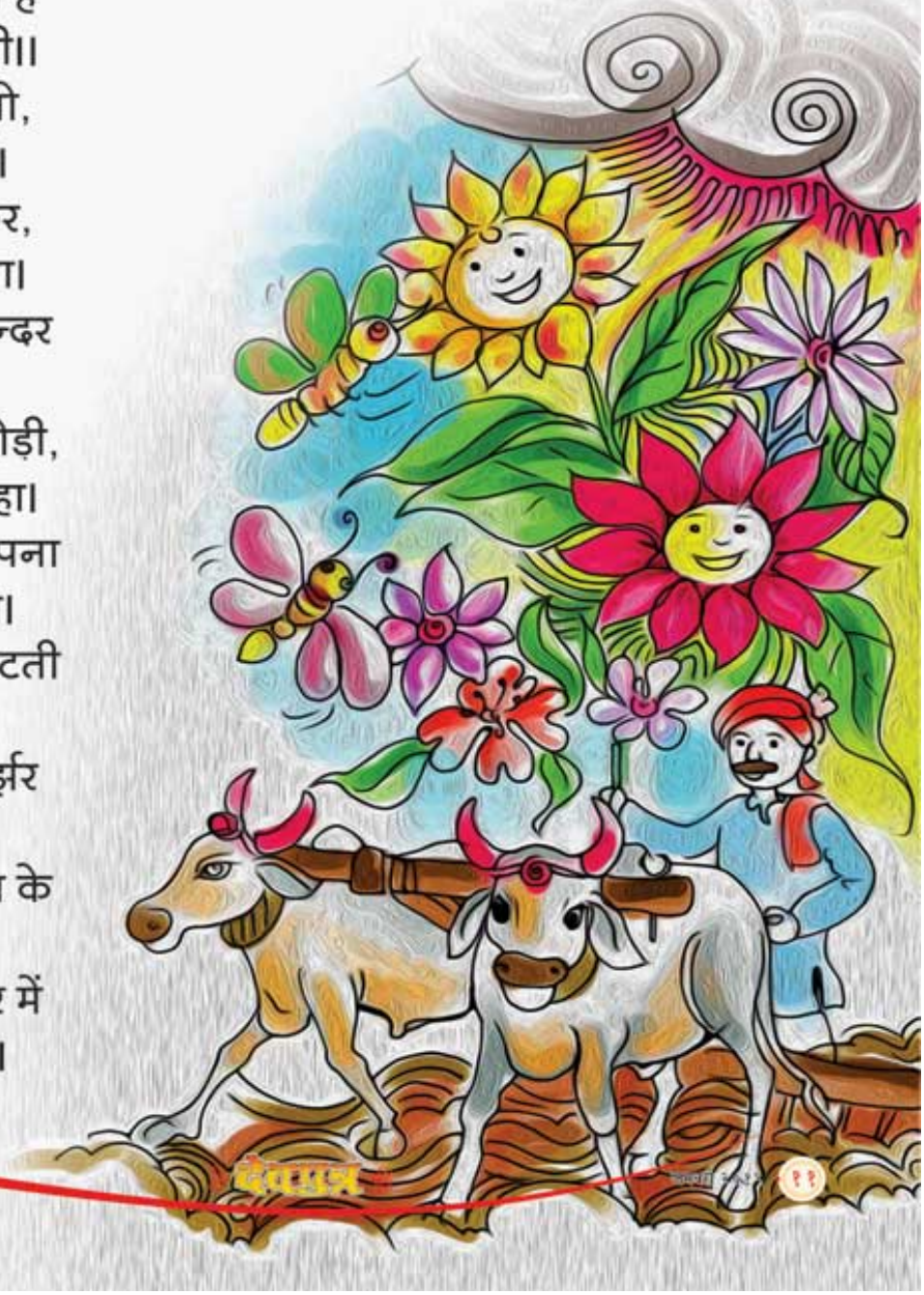

॥ १२ जनवरीः जयंती ॥

स्वामी विवेकानंद : एक ज्योतिर्मान नक्षत्र

आलेखः लालमणि सिंह चौहान

यह रत्नगर्भा भारत भूमि अपने अन्तर में जहाँ असंख्य मणिमुक्ताएँ छिपाये बैठी है वहीं उसके आंचल में समय समय पर ऐसे नररत्न भी पैदा हुए हैं जिनकी जीवन ज्योति से जगतीतल जगमगा उठा। जिन्होंने चट्टान बनकर समय का प्रवाह रोक दिया जो अपने लिए नहीं विश्व के लिए जिए। ऐसे विलक्षण पुरुष भारत में एक-दो नहीं हुए है, इनकी एक विशाल मालिका है, इसी दिव्य मालिका के एक ज्योतिर्मान रत्न है स्वामी विवेकानंद।

१२ जनवरी १८६३ ई. को जब प्रकृति में संक्रांति हो रही थी, भगवान भुवन भास्कर अपनी राह बदल रहे थे, सभी नर-नारी भागीरथी की ओर स्नान करने जा रहे थे। सूर्योदय के कुछ क्षण पूर्व ६ बजकर ३३ मिनट पर माँ भुवनेश्वरी पिता विश्वनाथ दत्त के घर में एक शिशु जन्मा। आनन्द से मंगल वाद्य बज उठे। पवित्र मातृभूमि तथा उस दिन की नव उषा ने उस नवजात शिशु का स्वागत किया, क्योंकि प्रकृति के साथ वह भी अपने जीवन में उत्क्रांति चाहती थी।

वह शिशु वाराणसी के विश्वेश्वर महादेव की आराधना के प्रसाद रूप में जन्मा था जिसका नाम रखा गया नरेन्द्रनाथ।

स्नातक की शिक्षा पूर्णकर दक्षिणेश्वर श्रीराम-कृष्ण परमहंस के पास पहुँच गये। जैसे ही कमरे में प्रवेश किये परमहंस जी बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने नरेन्द्र से भजन गाने को कहा। फिर क्या मधुर स्वर में भजन गाने लगे। इसी समय नरेन्द्र परमेश्वर का साक्षात्कार करना चाह रहे थे।

भूख प्यास की ज्वाला में जलते परिवार की व्यथा आखिर में कब तक सहते। एक दिन माँ से ना रहा गया। वे क्रुद्ध हो गई और बोली चुप रह लड़के। बचपन से ही भगवान-भगवान कहता है, क्या कुछ किया तुम्हारे भगवान ने देख लिया। यह बात तीर की तरह चुभ गई। उनके मन में यह विचार आया कि यदि ठाकुर जी (परमहंस) की बात भगवान मानते हैं यदि वे मेरे लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं तो कोई हल निकलेगा। ठाकुर मेरी बात टाल नहीं सकते इसी दृष्टि से वे दक्षिणेश्वर पहुंचे। वे बोले आप को मेरी कुछ न कुछ व्यवस्था करनी होगी। यदि आप अपनी

माँ से कहें तो वे मेरे सभी कष्टों का निवारण कर सकती हैं। ठाकुर जी बोले अरे यह सब माँ से मैं कुछ नहीं माँगता। तू ही जाकर क्यों नहीं माँग लेता? तू माँ को नहीं मानता इसलिए सारे कष्ट भोगने पड़ रहे हैं। थोड़ी देर चुप रहने के बाद पुनः बोले– ''आज रात तू जा माँ से जो भी मांगेगा वह सब तुमको देंगी। नरेन्द्र को विश्वास हो गया।'' रात में वे काली मंदिर में गए, माँ काली की चैतन्य मूर्ति देखकर आत्मविभोर हो गए, सांसारिक माया का बंधन कट गया, वे सारा दुःख भूल गए। उन्हें माँ और भाइयों के कष्टों का ध्यान ही ना रहा। वे नतमस्तक होकर बोले –''**माँ मुझे विवेक दो, वैराग्य दो, ज्ञान और भक्ति दो, अपना साक्षात्कार होने दो।**''

११ सितम्बर १८९३ विश्व के इतिहास का वह स्वर्णिम पृष्ठ है, जो कभी धुंधला हो नहीं सकता। प्राच्य और पाश्चात्य मिलन का शुभ दिवस इतिहास का गौरव है। इसी दिन स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित भारत के वेदान्त धर्म ने विजयी होकर विश्व को आश्चर्य में डाल दिया। हजारों दर्शकों से खचाखच भरे हाल में सभा प्रारम्भ हुई। मंच पर सभी धर्मों के प्रतिनिधि देश–विदेश से विराजमान थे। सभापति की आज्ञा से सभी प्रतिनिधि अपना–अपना परिचय देकर अपने धर्म का संक्षिप्त परिचय देते और फिर अपना स्थान ग्रहण कर लेते, अन्त में बारी आई स्वामी जी की।

आध्यात्मिक तेज से जगमगाता दिव्य आनन जैसे ही मंच पर उभरा, सभा का ध्यान बरबस उधर खींच गया पहले वाक्य–''अमेरिका के बहिनो और भाइयो!'' में न जाने कैसा जादू भरा था कि सुनते ही करतल ध्वनि से सभा स्थल गूंज उठा। बार–बार प्रयास करने पर भी वह आनन्द का हिलोर शान्त होने का नाम ही न लेता। स्वामी जी का प्रयास जब काम न कर सका तो वे भी चुप खड़े हो गए। जैसे–जैसे स्वामी जी बोलते जाते, श्रोता जन खड़े होते जाते चारों ओर से बार–बार ऐसी करतल ध्वनि गूंज जाती जो रुकने का नाम ही न लेती। पाश्चात्य जगत के मानवों के अन्तःकरण में क्षणभर के लिए प्रथम बार मानव जाति के एकत्व की अनुभूति उत्पन्न हुई। स्वामी जी की वाणी में मानव की मानव के प्रति वेदना बोल रही थी। भारतीय ऋषियों की वाणी झंकृत हो रही थी। रोम्यां रोला ने लिखा है कि– ''यही श्री रामकृष्ण देव का विश्वास था जो समस्त विघ्न– बाधाओं का अतिक्रमण कर उनके महान शिष्य के मुख से निकला उनके भाषण में शाश्वत प्रेम की वाणी गूंज रही थी।''

हिन्दू धर्म की जय जयकार– अपने उन्नत एवं विकास के गर्व से अमेरिकावासी पागलों की भाँति स्वामी जी के पीछे–पीछे घूम रहे थे, सारा अमेरिका उनके चरणों में लोट गया। वहाँ के समाचार पत्रों ने लिखा– 'उनका वक्तृत्व सुनने के बाद भारत की तरह ज्ञान–समृद्ध देश में धर्म प्रचारक भेजना कैसी मूर्खता की बात है।' भगिनी निवेदिता ने लिखा है– 'स्वामी जी ने जब शिकागो महासभा में भाषण देना प्रारम्भ किया तो हिन्दू संस्कृति का अतीत उनके माध्यम से श्रोताओं के समक्ष साक्षात् खड़ा हो गया, भारत के गौरवशाली भूतकाल की ज्योति देखकर वे हतप्रभ हो गये।' महासभा का उनका अंतिम भाषण २७ सितम्बर को हुआ, जिसमें भारतीय संस्कृति के महत्व को सर्वोच्च शिखर पर अधिष्ठित कर दिया।

स्वामी जी ने शारीरिक बल पर अत्याधिक बल देते हुए कहा है– ''अनन्त सामर्थ्य ही धर्म है, बल पुण्य है और दुर्बलता पाप, सभी पापों और बुराइयों के लिए एक ही शब्द पर्याप्त है और वह है दुर्बलता। आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है वह है लोहे की मांसपेशियां और फौलाद की स्नायु दुर्दमनीय इच्छाशक्ति जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में समर्थ हो, फिर उसे समुद्र तल में ही क्यों न जाना पड़े, साक्षात मृत्यु का ही सामना क्यो न करना

पड़े?''

नवयुवकों को आह्वान करते हुए स्वामी जी ने कहा– ''मेरे नवयुवक मित्रो! बलवानो! तुमको मेरी सलाह है गीता के अभ्यास की अपेक्षा फुटबाल खेल के द्वारा तुम स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच जाओगे। तुम्हारी कलाई एवं भुजाएं अधिक सुदृढ़ होने पर तुम श्रीकृष्ण की महान प्रतिभा और अपार शक्ति को अच्छी तरह समझने लगोगे, तुम जब पैरों पर दृढ़ता के साथ खड़े होगे और जब यह प्रतीत होगा कि हम मनुष्य हैं तब उपनिषदों को और अच्छी तरह समझने लगोगे और आत्मा की महिमा को जान सकोगे।''

स्वामी विवेकानंद जी ने भारतवासियों को आह्वान करते हुए आत्म ज्ञान का उपदेश दिया है– ''ऐ, भारत भूलना नहीं कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सवित्री, दमयंती है। भूलना नहीं कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर है। भूलना नहीं कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन, इन्द्रिय सुख अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है, भूलना नहीं कि तुम जन्म से ही माता के लिए बाल स्वरूप रखे गये हो। भूलना नहीं कि तुम्हारा समाज उस महामाया की छाया मात्र है, भूलना नहीं कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र और मेहतर तुम्हारे रक्त मांस हैं, तुम्हारे भाई है, ऐ वीर! साहस का अवलम्बन करो।

गर्व से बोलो कि मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम चिल्लाकर कहो अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चंडाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं। तुम गर्व से पुकार कर कहो कि भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, मेरी जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है। भाई बोलों कि भारत की मिट्टी मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है और रात दिन कहते रहो– हे गौरीनाथ! जगदम्बे! मुझे मनुष्यत्व दो। मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो– माँ मुझे मनुष्य बना दो।''

– सीधी (म.प्र.)

महत्वपूर्ण दिवसः २६ जनवरी

जानकारीः नरेश कुमार बंका

२६ जनवरी १६५० को हमारा देश गणराज्य बना था, इसलिए २६ जनवरी भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह दिन हमारे देश का प्रमुख राष्ट्रीय पर्व है। इसी दिन अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं हुई, जिससे गणतंत्र दिवस यानी २६ जनवरी का काफी महत्व बढ़ जाता है। कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण इस प्रकार है।

२६ जनवरी, १८३२ ई.	अंग्रेजों ने सर्वप्रथम काबुल में डेरा डाला।
२६ जनवरी, १८३५ ई.	अंग्रेजों ने पहली बार समाचार पत्रों को आजादी दी।
२६ जनवरी, १८५३ ई.	भारत में सर्वप्रथम रेल व्यवस्था की स्थापना।
२६ जनवरी, १८६२ ई.	बम्बई हाईकोर्ट की स्थापना।
२६ जनवरी, १८६८ ई.	आय का कानून पारित हुआ।
२६ जनवरी, १८६९ ई.	विश्व प्रसिद्ध नहर स्वेज का निर्माण हुआ।
२६ जनवरी, १८७६ ई.	कलकत्ता से बम्बई पहली रेल चली।
२६ जनवरी, १८८२ ई.	बम्बई मद्रास तथा कलकत्ता में पहली बार टेलीफोन सेवा प्रारंभ की गयी।
२६ जनवरी, १८८६ ई.	पोरबंदर (गुजरात) में स्टेशन का निर्माण हुआ।
२६ जनवरी, १९०३ ई.	पहला तिब्बती मिशन भारत आया।
२६ जनवरी, १९३० ई.	भारत द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने की घोषणा।
२६ जनवरी, १९४१ ई.	नेताजी सुभाषचंद्र बोस का भारत से पलायन।
२६ जनवरी, १९५० ई.	संयुक्त प्रांत का नाम बदलकर उत्तर प्रदेश किया गया।
२६ जनवरी, १९५० ई.	वाराणसी के समाचार पत्र गांडीव का जन्म हुआ।
२६ जनवरी, १९५७ ई.	जम्मू और कश्मीर में नया संविधान लागू हुआ।
२६ जनवरी, १९६९ ई.	मद्रास का नाम बदलकर तमिलनाडु रखा गया।
२६ जनवरी, १९७३ ई.	श्रीनगर में दूरदर्शन केन्द्र का उद्घाटन।
२६ जनवरी, १९९३ ई.	निजी बैंक खोलने की अनुमति प्रदान की गयी।

– रांची (झारखण्ड)

परेड की तैयारी

चित्रकथा
देवांशु वत्स

सूरत की सम्पदा

भीषण अकाल। स्वराज्य की जनता दाने–दाने के लिए तरस गयी। आखिर मेघ उमड़ आये, बरसात शुरु हो गयी। लेकिन बीज का एक दाना भी नहीं, किसान बोये तो क्या बोये?

गांवों के मुखिया शिवाजी महाराज के पास आये। अपना कष्ट निवेदन कर उसके निवारण का उपाय करने की प्रार्थना की। छत्रपति को कोई उपाय समझ में नहीं आया। तो विचारमग्न हो गये।

''क्या है, शिब्बा?'' राजमाता जीजाबाई ने आखिर पूछ ही लिया।

''माँ, गांवों के ये मुखिया अकाल के कष्टों का निवेदन करने आये हैं। स्वराज्य की जनता के कष्ट का निवारण किस प्रकार करूं? ऐसा कोई उपाय मुझे सूझ नहीं रहा है।'' शिवाजी ने समस्या रखी।

''तो परेशान होने की क्या बात है। राज्य के अन्न भंडार किस दिन के लिए हैं? खोल दो उन्हें। धरती माता एक–एक दाने के हजार हजार दाने करके लौटा देंगी।'' माता बोलीं।

पुत्र ने सहमति स्वरूप हाथ जोड़ कर माथा नवा दिया।

प्रजा ने समवेत स्वर में जयकार की– ''माता जीजाबाई की जय। छत्रपति शिवाजी की जय।''

महाराज ने प्रजा के हित में सारा कोष लगा दिया। भुखमरी कम जरूर हुई, लेकिन आर्थिक स्थिति फिर भी सोचनीय बनी रही।

बरसात बीत गयी। रबी की फसल भी राज्य की सहायता से बो दी गई। खेत लहलहा उठे और साथ ही किसानों के हृदयों में भी उमंगें उठने लगीं। दूर चारागाहों में चरवाहों की बांसुरी फिर गूंजने लगी। लेकिन महाराज की चिन्ताओं में कमी नहीं हुई, वरन वृद्धि ही हुई।

पुत्र की हर प्रकार से चिन्ता करने वाली माता जीजाबाई को शिवाजी की चिन्ताओं का पता रहता था।

शिवाजी ने आकर देवी को घुटने टेक कर प्रणाम किया और फिर माता जीजाबाई को। माँ का आशीर्वाद मिला। माता ने शिवाजी को बाहर एक ऊँचे स्थान पर ले जाकर खड़ा किया और बोलीं– ''शिब्बा, तुमने स्वराज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए क्यों सोचा?''

शिवाजी के माथे पर चिन्ता की रेखाएं गहरी हो आयीं– ''माँ! मैं प्रजा के हित में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास कर रहा हूँ। लेकिन विदेशी शासकों और व्यापारियों ने प्रजा को जिस प्रकार लूटा है, उससे उनकी कमर टूट चुकी है।''

''जनता का लूटा गया यह धन तुम्हें वापस लाना होगा। इसके अतिरिक्त अब कोई उपाय नहीं बचा है। स्वराज्य की प्रजा के हित में तुम्हें यह कार्य करना ही होगा।'' माता ने कहा।

''माँ! सोचता तो मैं भी हूँ कि मुगल राज्य पर धावे कर सारा लूटा हुआ धन लाकर जनहित में लगाऊँ और सारी गरीबी, भुखमरी, बीमारी और बेरोजगारी का उपाय एक साथ ही कर डालूं। लेकिन यह कैसे सम्भव होगा?'' शिवाजी बोले।

माता जीजाबाई क्षण भर गंभीर हो गयीं फिर हाथ उठाकर क्षितिज के एक कोने पर अंगुली से दिखाया– ''बेटे, देखो, उधर क्या है?''

''माँ, वह सूरत नगरी है।''

''बस एक यह नगरी ही स्वराज्य के सारो कष्टों का बहुत कुछ निदान कर देगी। वहाँ भरी हुई अपार सम्पदा देश के किसानों की कमाई है। उसे रोक रखने का उन्हें कोई हक नहीं है।'' माता ऊर्जस्वित स्वर में कहती गयी। शिवाजी ने गुप्तचरों के प्रधान अधिकारी बहिर्जी नाईक का इशारे से बुलाकर पूछा– ''बहिर्जी, सूरत में मुगलों की कितनी फौज होगी?''

''बादशाह का हुक्म तो है कि वहाँ ५ हजार सैनिक रखे जायें, लेकिन सुबेदार इनायत खां ने सिर्फ १ हजार सैनिक वहाँ रख छोड़ हैं।'' नाईक बोला।

''ठीक है, राजे! आज विजयादशमी है। सूरत की लूट की तैयारी होनी चाहिए।'' माँ ने आदेश दिया।

बहिर्जी नाईक ने फकीर के वेश में अपने साथियों को लेकर सूरत और वहाँ पहुंचाने वाले मार्गों पर चौकसी तथा जासूसी का जाल बिछा दिया। शिवाजी को विस्तृत सूचनाएं प्राप्त होती रहीं।

सूरत ताप्ती नदी के किनारे पर बसा था। वह मुगल राज्य का सबसे धनी नगर था। तुर्क, अरब, डच, अंग्रेज आदि वहां रहकर व्यापार करते और मालामाल होते थे।

सूरत की पूरी खोज–खबर लेकर बहिर्जी राजधानी राजगढ़ लौटे।

६ दिसम्बर, १६६३। हर हर महादेव का युद्धघोष करती मराठा सेना निकल पड़ी। ४ जनवरी, १६६४ को सूरत के पास पहुंचे तो अफवाह उड़ा दी गयी कि औरंगाबाद की मुगल फौज महावत खां की मदद के लिए अहमदाबाद जा रही है।

अगले दिन सबेरे मावली सैनिकों ने सूरत के धनी इलाकों में छापे मारने शुरु किये तो सूबेदार इनायत खां के पास भाग कर लोग पहुंचे–''मराठा राजा शिवाजी आ गया है।'' अंग्रेज, डच और अरब भी इन फरियादियों में शामिल थे।

परन्तु इनायत खां ने झिड़क दिया– ''मैंने पता लगा लिया है। मुगल फौज महावत खां की मदद के लिए अहमदाबाद जा रही है। अगर वह शिवाजी है तो उससे निपट लिया जायेगा।''

व्यापारी निराश उदास लौट गये।

मराठा सैनिकों ने प्रमुख प्रमुख व्यापारियों को सूचित किया कि वे महराज को आकर भेंट दें। सूबेदार के पास भी दूत गया, लेकिन उसने दरबार की नर्तकी के द्वारा महाराज को विष दिलाने का षड्यंत्र किया। षड्यंत्र विफल रहा। महाराज ने उपवास का बहाना कर कुछ भी न लिया।

शाम तक मराठा जहाज समुद्र तट पर आ लगे।

महाराज के निर्देश के अनुसार व्यापारियों और सूबेदार से भेंट न मिलने पर, नगर के धनाढ्य इलाकों पर छापे पड़ने लगे। महाराज की आज्ञा थी। कि गरीबों के मकान छापे से अछूते रहें। महिलाओं की इज्जत सुरक्षित रखी जाय। सारा सोना, चांदी, आभूषण, हीरे, मोती तथा अन्य जवाहरात सभी सैन्य शिविर के खजाने में जमा कर दिये जाय।

यह उथल–पुथल मची ही थी कि एक युवक मराठा शिविर में आया। उसने महाराज से मिलने की इच्छा

प्रकट की। मोरोपन्त उसे महाराज के पास ले गये। युवक ने कहा– ''मैं सुबेदार इनायत खां का वकील हूँ और आप से अकेले में बात करना चाहता हूँ।''

छत्रपति के संकेत पर मराठा सरदार पीछे हट गये। तभी युवक ने एक कटार तेजी से निकाली और महाराज पर वार कर दिया। लेकिन यह क्या? शिवाजी से लगने पूर्व ही कटार सहित उसका हाथ कट कर जमीन पर आ गिरा। एक मराठा गुप्तचर ने युवक की हरकत देख ली थी। अगले ही क्षण युवक का सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

मराठा सेना छत्रपति पर प्रहार करने की घटना से अत्यंत उत्तेजित हो गयी। सारे मुस्लिम बंदियों को कत्ल कर दिया गया। शिवाजी ने उन्हें शांत करने का प्रयास तो किया किन्तु तब तक कार्य हो चुका था।

सूरत में भयानक लूटमार की गयी। सूबेदार किले से बाहर नहीं आया। ७ से १० जनवरी तक नगर को भरपूर लूटा गया। विशाल सम्पदा हाथ लगी। मराठा जहाजों में उसे लाद कर स्वराज्य के बन्दरगाहों के लिए रवाना कर दिया गया। जो शेष रहा वह घोड़ों पर लादा गया।

११ जनवरी १६६४। धन से लदे ५ हजार घोड़ों का कारवां, ५ हजार मराठा घुड़सवार सेना के संरक्षण में राजगढ़ की ओर लौट रहा था।

****

और अब स्वराज्य के लिए धन की कोई कमी न थी। महाराष्ट्र की धरती देश की सम्पदा को अपने सपूतों के लिए संजो रही थी। देश के भाग्योदय का प्रारम्भ हो चुका था।

(निरंतर अगले अकं में)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

एक महिला एक छोटे बच्चे के साथ बस स्टॉप पर खड़ी थी। उसी समय एक व्यक्ति वहां आया। उसने उस महिला से पूछा- ''यह बच्चा आपका क्या लगता है?'' महिला ने जवाब दिया- ''इसके पिता जिसके ससुर हैं, उसके पिता मेरे ससुर हैं।'' क्या आप बता सकते हैं कि उस महिला और बच्चे में क्या संबंध है?

(उत्तर इसी अंक में)

निडर क्रांतिकारी सुभाष

कविता : आचार्य भगवत् दुबे

जिनके गर्म विचार खास थे
निडर क्रांतिकारी सुभाष थे
आजादी के थे दीवाने
बड़े हमेशा सीना ताने
किया नाक में दम गोरों की
भड़क उठी सत्ता चोरों की
इनको नजरबन्द करवाया
नेता जी ने खूब छकाया

बने मौलवी निकले बाहर
शक्ति बढ़ाई जर्मन जाकर
इनने अपनी फौज बनाई
इनके साथ हुई तरुणाई
थी आजाद हिन्द की सेना
लक्ष्य रहा आजादी लेना
इनने कहा खून दो मुझको
मैं दूँगा आजादी तुमको

बल पाया माता बहनों से
तौल दिया जिनने गहनों से
भीख नहीं इनको भाती थी
लड़कर जीत इन्हें आती थी
दुर्घटना में स्वर्ग सिधारे
नमन तुम्हें नेताजी प्यारे

– जबलपुर (म.प्र.)

नीली पतंग

लघुकथा : मीरा जैन

चौदह वर्षीय नीना को अब बड़ों की समझाइश और घर की छोटी मोटी पाबंदियाँ भी अखरने लगी थी अतः व्यथित मन ने बिना सोचे समझे घर से भागने का फैसला कर लिया। किसी सखी के माध्यम से इसकी भनक नीना के दादीजी को लग गई उन्होंने न नीना को डॉटा न फटकारा बल्कि छत पर घूमते हुए बड़े प्यार से एक कहानी सुनायी–

''नीना! वो देखो आकाश में लाल रंग की पतंग कितनी ऊचाइयों को छू रही है क्योंकि पड़ोस में रहने वाला जीतू उसे पूरी तन्मयता से उड़ाते हुए उसकी सुरक्षा का ख्याल भी रख रहा है कल तक उसके पास एक नीली पतंग थी पर वह हमेशा इसी बात को लेकर परेशान रहती कि उसके जीवन में स्वच्छंदता है ही नहीं जब देखो तब धागे से बंधी रहती हूँ और जब तक उड़ाने वाला नहीं आये यहीं पड़े रहना पड़ता है मैं कभी भी अपनी इच्छा से बहती हवा का मजा ले ही नहीं पाती। अचानक हवा का एक झोंका उसे उड़ा ले गया तो नीली पतंग की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा और ज्यों ही हवा चली वह उड़ पड़ी आकाश की ओर। कुछ देर हवा के साथ खुले आकाश में इधर उधर उड़ते हुए गर्व से इठलाती रही लेकिन ज्यों ही हवा थमी वह न चाहते हुए भी दिशा हीन हो नीचे की तरफ आने लगी और पलक झपकते ही धरती पर उगी कटीली झाड़ियों पर आ गिरी जिससे उसका शरीर व अस्तित्व दोनों ही तार– तार हो समाप्त हो गये।''

नीली पतंग की कहानी सुन नीना की आँखें नम हो गई और उसी क्षण अपने घर से भागने वाली इच्छा को दिल में हमेशा के लिए दफन कर दादीजी से लिपट कर रोने लगी।

– उज्जैन (म.प्र.)

लाल और काली पतंग

कहानी: नरेन्द्र देवांगन

दो पतंगे थीं। एक गुलाब की तरह लाल और दूसरी काले रंग की। दोनों पतंगें कागज की बनी हुई थीं और डोर के सहारे अकाश में उड़ती थीं। पर उन दोनों के स्वभाव में जमीन आसमान का अंतर था। जहां काली पतंग मिल-जुलकर रहने वाली स्वभाव की थी, वहीं लाल पतंग घमंड से भरी झगडालू किस्म की थी।

एक दिन आसमान में कुछ पक्षी भी उड़ रहे थे। उन्होंने अपने बीच लाल पतंग को उड़ते देखा तो दोस्ती करने उसके पास आ गए।

''हटो-हटो, दूर हटो। मेरे नजदीक नहीं आना। वरना मैं तुम्हें गिरा दूंगी। लाल पतंग ने उनको दुत्कारते हुए कहा, ''तुम्हारे शरीर कितने भद्दे हैं।''

''ऐसा मत बोलो, बहन। तुम्हें अपनी बीच पा कर हम बहुत खुश हैं। आओ, मिलकर साथ-साथ उड़ें।'' पक्षियों ने उसकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

लेकिन लाल पतंग पर तो अपने रूप का घमंड छाया हुआ था। उसने दो-तीन पक्षियों को अपनी डोर के वार से घायल कर दिया। जब वे फड़फड़ाते हुए नीचे गिरने लगे तो लाल पतंग जोर-जोर से हंसने लगी। यह देख कर बाकी पक्षी डर कर भाग गए।

इस घटना के बाद तो लाल पतंग की हरकतें और भी बढ़ गईं। वह पक्षियों से झगड़ती और उन्हें घायल करके खुश होती। एक दिन काली पतंग आसमान में दिखाई दी। उसे देखकर पक्षी फिर से डर कर भागने लगे।

''डरों नहीं दोस्तो! मैं तुम्हारी नई दोस्त हूँ। आओ, मिलकर साथ-साथ उड़ें।'' काली पतंग ने मीठी आवाज में कहा तो पक्षी डरते-डरते रुक गए।

''पहले ही उस घमंडी लाल पतंग ने हमारा जीना मुश्किल कर रखा है। ऊपर से तुम और आ गई हो। लगता है, हमें अपना आसमान छोड़ना पड़ेगा।'' कुछ पक्षियों ने सहमते हुए कहा।

''सभी एक जैसे नहीं होते, दोस्तो! मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊँगी।'' काली पतंग बोली तो पक्षियों ने राहत की सांस ली।

पक्षियों की काली पतंग से दोस्ती हो गई। उन्हें उसके साथ उड़ना बहुत अच्छा लगता था। उधर लाल पतंग खुद को सबसे सुंदर समझने के कारण अलग रहती।

एक दिन एक और काली पतंग पक्षियों के साथ उड़ रही थी तो दूसरी ओर लाल पतंग अकेली थी। तभी उधर से एक काला बादल गुजरा। काली पतंग उसे देखकर मुस्कुरा कर बोली, ''नमस्ते बादल भैया!'' आज बड़े खुश नजर आ रहे हो?''

''हाँ बहना! बहुत दिन हो गए कहीं बरसा नहीं हूँ। लेकिन अभी कुछ दिनों से वायु मंडल में कम दबाव का क्षेत्र बन गया है इसलिए मजबूरी में कहीं न कहीं मुझे

बरसना होगा। और जब बरसने का समय आता है मैं बहुत खुश रहता हूँ।'' बादल ने खुशी से झूमते हुए कहा।

''हमारा भी अभिवादन स्वीकार करो, बादल भैया!' काली पतंग के साथ उड़ रही सभी पक्षियों ने एक साथ कहा।

''तुम सबको नमस्ते, दोस्तो। आज काली पतंग बहना के साथ उड़ रहे हो, कितना अच्छा लग रहा है। हमेशा ऐसे ही मिल-जुलकर रहना।'' बादल ने सबको समझाते हुए कहा।

तभी बादल की नजर लाल पतंग पर गई। वह अकेले ही उड़ रही थी। बादल ने उसे पुकारा, ''ओ लाल पतंग बहन! अकेले उड़ने में कोई मजा नहीं है। इन सबके साथ उड़ो मजा आएगा।''

लाल पतंग को गुस्सा आ गया। बोली, 'अरे काले कलूटे बादल मुझे मत सिखा। मजा कैसे आता है मैं अच्छी तरह जानती हूँ।''

''बादल भैया की इज्जत करो, बहन! इस तरह घमंड नहीं किया करते।'' काली पतंग ने समझाया।

लाल पतंग इतरा कर बोली, ''काले, बदसूरत बादल की मैं इज्जत क्यों करूंगी। वह क्या मुझसे सुंदर है। देखो तो मैं कितनी खूबसूरत हूँ। किसी गुलाब की तरह।''

यह सुनकर काले बादल को गुस्सा आ गया। वह इनते जोर से गरजा की उसकी आवाज दूर-दूर तक फैल गई। उसने काली पतंग और पक्षियों से कहा, ''जरा तुम लोग कूद कर दूर हट जाओ। आज तो मेरे को बरसना ही है। मैं इस घमंडी पतंग को मजा चखाता हूँ।''

पक्षियों ने बीच-बचाव करना चाहा लेकिन काला बादल नहीं माना। मजबूर हो कर काली पतंग ने लाल पतंग से कहा, ''अरे! अभी भी समय है। माफी मांग ले, वरना तेरी खैर नहीं।''

लाल पतंग ने कहकहा लगा कर कहा, ''मैंने कहा न, तू बड़ी डरपोक है। उसकी गीदड़ भभकी से तू भी डर गई?''

काली पतंग और सभी पक्षी कुछ दूर हट गए और उड़ते रहे। बादल ने बरसना शुरु किया। रिमझिम रिमझिम...पलक झपकते लाल पतंग गीली हो कर गिरने लगी। आसमान से नीचे गिरती लाल पतंग को अपनी भूल का एहसास हो गया था। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

– खरोरा (छ.ग.)

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत् ।।

सब सुखी हों।

सब रोगरहित हों।

सब कल्याण का साक्षात्कार करें।

दु:ख का अंश किसी को भी प्राप्त न हो।

रसोमा लेबोरेटरीज प्रायवेट लिमिटेड

फोन 2551210, 2553174, 2550465, 2551938

फैक्स : (0731) 2584960

सात से
भाज्य/अविभाज्य संख्याएं

जानकारीः वि. के. डांगे

सात (७) से भाज्य संख्याओं के लिये अब तक कोई मानक पद्धति नहीं है। वैसे वैदिक गणित में इस हेतु एक पद्धति बताई है, परन्तु वैसा क्यों किया जाता है, यह नहीं बताया गया है।

इस लेख में लेखक द्वारा बताई पद्धति ''शीघ्र घटाने की पद्धति'' कही जा सकती है। इस पद्धति के उपयोगार्थ निम्न जानकारी आवश्यक है।

(१)घटाने की प्रक्रिया की जानकारी

(२)१ से २० तक के पहाड़े

(३)निम्न जानकारी

(अ)७ से भाज्य एक अंक की न्यूनतम संख्या ० एवं अधिकतम संख्या ७

७ से भाज्य दो अंक की न्यूनतम संख्या १४ एवं अधिकतम संख्या ९८

७ से भाज्य तीन अंक की न्यूनतम संख्या एवं १०५ अधिकतम संख्या ९९४

७ से भाज्य चार अंक की न्यूनतम संख्या १००१ एवं अधिकतम संख्या ९९९६

(ब) **भाज्यता/अविभाज्यता की प्रक्रिया** – प्रथम दी हुई संख्या को पूर्णतः लिखें। यदि इस संख्या में सात से भाज्य है, तो उसके हर अक के लिए ० लिखें व मूल संख्या के उस भाज्य भाग को हटा दें।

(स) शेष संख्या को लिखे।

इस शेष संख्या में से (अ) में दी गई संख्याओं के गुणज घटायें। सात से भाज्य न्यूनतम संख्याओं के गुणज घटाना सुविधा युक्त होगा।

(द) यह प्रक्रिया दोहरायें– यदि शेषफल शून्य है, तो मूल संख्या ७ से भाज्य है, अन्यथा अविभाज्य है।

उदाहरण –

९१, ८२, ३७, ४५८

बाई ओर से ९१ (७ से भाज्य) हटाने पर

९१, ८२, ३७, ४५८
९१, ७

००, ८२, ३०, ४५८

= ८२, ३०, ४५८

दायें हाथ की ओर संख्या विलोपित इस प्रकार करें

१००१ गुणा ४५८=४५८४५८

इसे निम्न प्रकार से घटायें–

८२, ३०, ४५८
– ४, ५८, ४५८

– ७७,७२,०००

बायें हाथ वाली संख्या ७७७ सात से भाज्य है, दाहिने हाथ वाली संख्या ०००, सात से भाज्य है। शेष संख्या निम्न है,

७७, ७२, ०००
७७, ७– ०००

=००० २०००

= २ (यह ७ से अविभाज्य है)

दी गई मूल संख्या ७ से अविभाज्य है।

दूसरा उदाहरण–

दी गई मूल संख्या–

१२, ९९, ४५, ३६, ७८१
–७, ८१, ७८१

१२,९९,३७,५५,०००

दाईं ओर से ००० हटाने पर

१२, ९९, ३७, ५५

= १२, ९९, ३७, ५५

प्रक्रिया दोहराते हुए

१००१ x ७५५ = ७५५७५५

१२, ९९, ३७, ५५

−७५, ५७, ५५

१२,२३,८०००

दायीं ओर से ००० हटाने पर

१२, २३८

१२, २३८

(१००१ x २३८ = २३८२३८)

१२, २३८ व २३८२३८ में अंतर

२३८२३८

−१२२३८

२२६०००

२२६ में से १०५ का निकटतम गुणज

१०५ x २ = २१०, घटाये

२२६

−२१०

१६ (यह ७ से अविभाज्य है)

दी गई मूल संख्या ७ से अविभाज्य है।

उपरोक्त प्रक्रियायें दीर्घ प्रतीत होती हैं परंतु अभ्यास से स्पष्ट होगा कि यह सरल व कम समय लेने वाली प्रक्रियायें है।

– इन्दौर (म.प्र.)

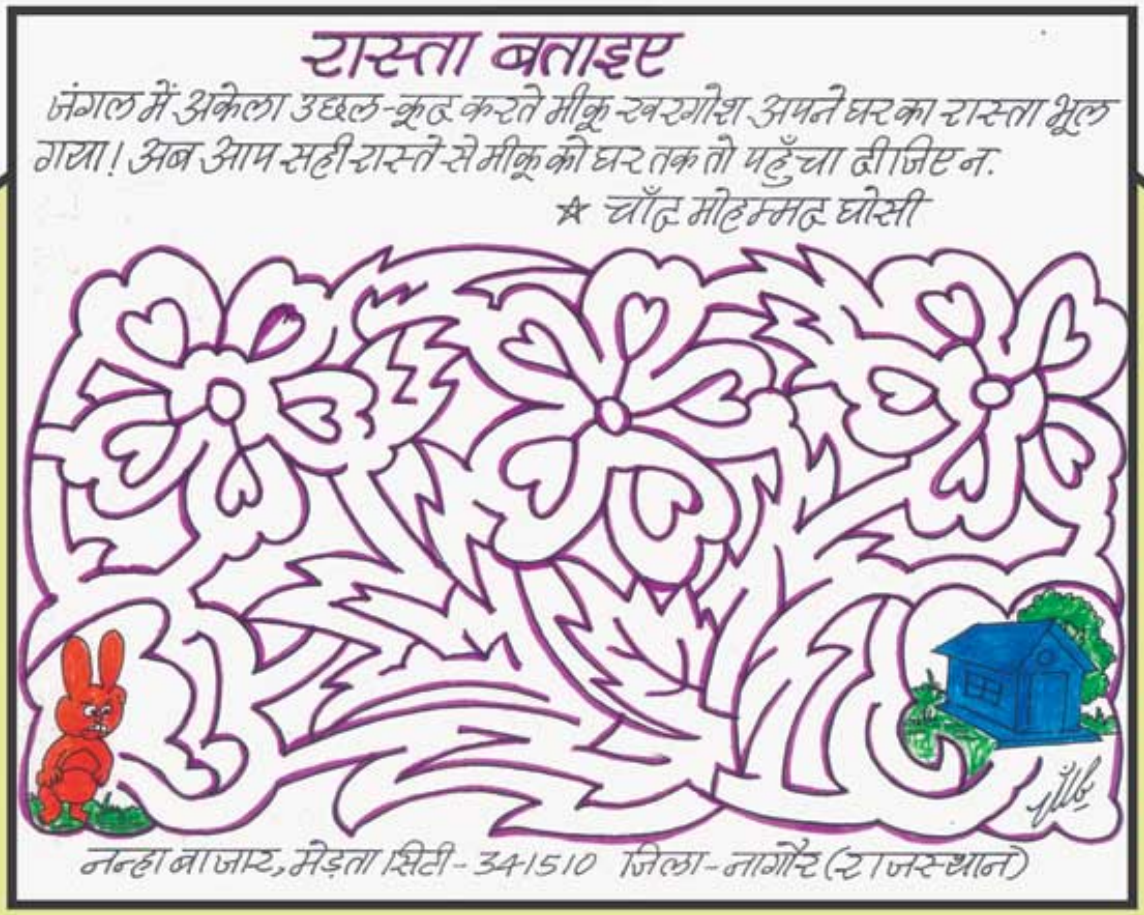

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१८)

कथासत्र–१७

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। तीनों बच्चे आए और दादाजी भी। उस दिन कुछ प्रसंग उठाए बिना दादाजी ने कहा– ''दामोदर देव के जीवन में सबसे बड़ी घटना थी उनकी पत्नी का देहान्त होना और बाद में कन्या भी चल बसी। उस घटना से दामोदर अधिक विरक्त हो गए और ये सब प्रभु का आशीर्वाद मानकर केवल समाज संस्कार और धर्म प्रचार में अपने को समर्पित कर दिया। शिष्यों की संख्या दिन–दिन बढ़ती जा रही थे, परन्तु उनमें बारह शिष्य प्रमुख थे। ये थे– विष्णुदास, रमानंद, रातुलचरण, मधु, कृष्णानंद, हरि, रघुनाथ, जगन्नाथ, रामदास और रामराय। इनके अतिरिक्त बैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य सबसे प्रमुख तथा सर्वश्रेष्ठ विद्वान शिष्य थे। उन शिष्यों के जरिए कामरूप के विभिन्न स्थानों में २५४ सत्रों की स्थापना की थी। वर्तमान असम के प्रमुख सत्र माजुली के आउनीआटी, गड़मूर, कुरुबाबाही और दक्षिणपाट दमोदरीया सत्र ही है।

शंकर – राजदरबार में दामोदरदेव की जीत होने के बाद स्वयं राजा का प्रियभाजन हो गये थे क्या?

दादाजी – नहीं। राजदरबार से आकर दामोदरदेव बेदुवा के घर में एक वर्ष रहे। उधर उनके विरोधीगण चुप नहीं बैठे थे। वे राजा के पास जाकर दामोदर के विरुद्ध शिकायत करते रहे। उस समय के राजा बहुत बड़े लिखे नहीं थे और ब्राह्मणों को ही धार्मिक उपदेष्टा मानकर चलते थे। राजा परीक्षित नारायण ने दामोदरदेव के प्रति नाराज होकर उनके राज्य से निकल जाने का आदेश दिया। राजा का आदेश सुनकर बेदुवा विप्र सहित भक्त शिष्यगण हाहाकार कर रोने लगे, परंतु गुरुदेव विचलित न होकर प्रभु का आदेश मानकर वहाँ से कोचबिहार के राजा लक्ष्मीनारायण के राज्य में चले गए।

यह समाचार पाटवाउसी तक पहुँच गया। उनके उत्तराधिकारी परम विद्वान शिष्य बैकुण्ठनाथ भट्टाचार्य याने भट्टदेव विचलित हो गए। उनमे मिलने के लिए आप निकल पड़े। वर्तमान उत्तर बंगाल के कोचबिहार जिलान्तर्गत सोणकोष नदी के तट पर गुरु शिष्य का मिलन हुआ। पाटवा उसी सत्र छोड़ते समय गुरुदेव ने बैकुण्ठनाथ को कथाबंधे (गद्य में) भागवत लिखने का आदेश देकर आया था। बैकुण्ठनाथ भागवत के प्रथम स्कंध का अनुवाद साथ लेकर गए और गुरुदेव के चरणों में अर्पित कर दिया। गुरु दामोदर ने अनुवाद अच्छी तरह देखा और कहा कि अनुवाद बहुत अच्छा

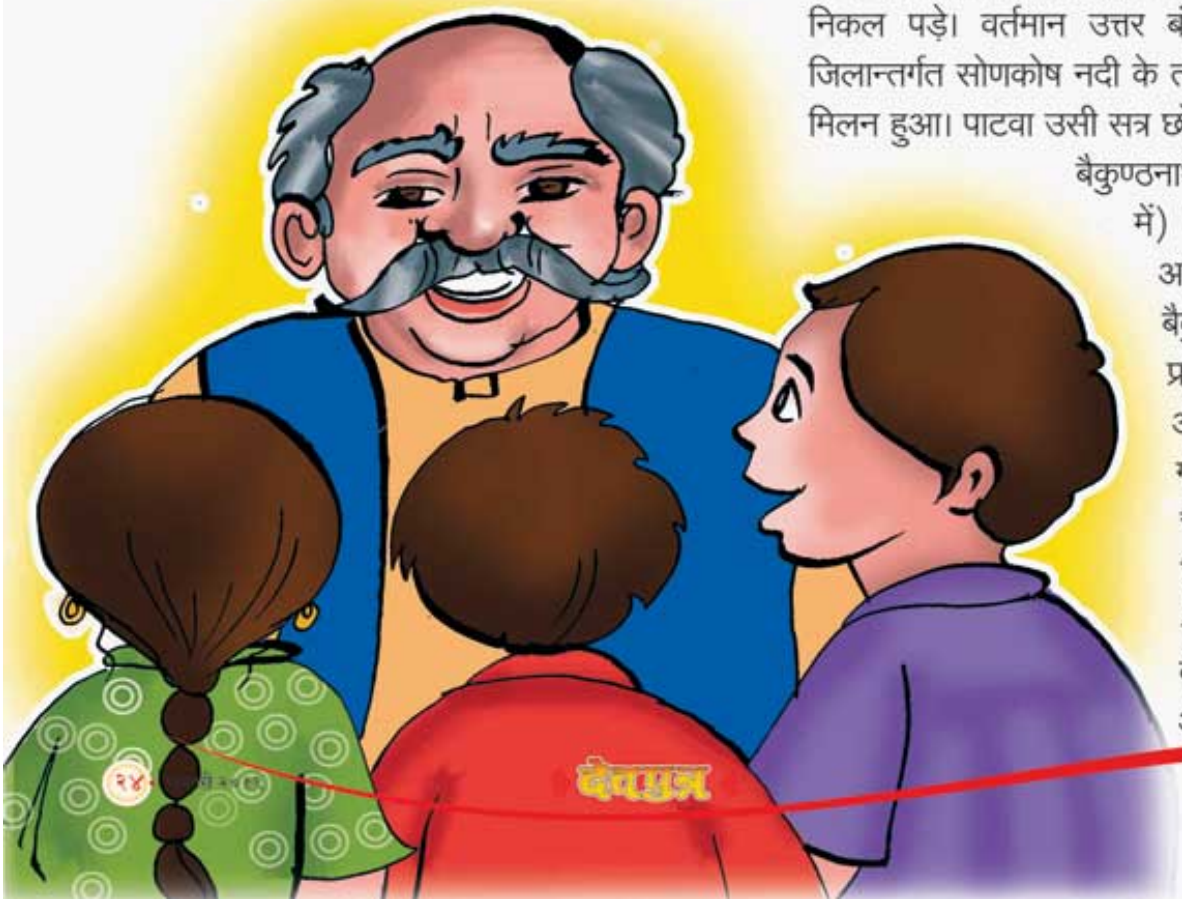

हुआ, परन्तु इससे और अधिक संक्षेप होना उचित है। गुरु का आदेश शिरोधार्य कर बैकुण्ठनाथ पुनः वापस पाटबाउसी आए और सत्र को संचालित करने के साथ–साथ भागवत का गद्यानुवाद का काम भी सम्पन्न किया। कोचबिहार के राजा लक्ष्मीनारायण को समाचार मिला कि गुरु दामोदरदेव उनके राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। उनको अपार हर्ष हुआ और पालकी लेकर मंत्री और अधिकारियों को गुरुदेव को सम्मान सहित राजदरबार में ले आने का आदेश दिया। मंत्री, अधिकारी, सेना अपने राज्य के सीमा से गुरुदेव को पालकी पर उठाकर हरिनाम कीर्तन के साथ शोभायात्रा पूर्वक दो दिन के बाद राजधानी के सिंहद्वार पर उपस्थित हुए। राजा सहित नगर के अगणित लोग गुरुदेव के स्वागत के लिए उपस्थित हुए। चारों तरफ हरिनाम कीर्तन से मुखरित होने लगे। महाराज लक्ष्मीनारायण ने स्वयं गुरुदेव के चरण धुलाकर पदजल अपने सिर पर चढ़ाए और राजदरबार में धूमधाम से स्वागत किया। राजा ने गुरुदेव क टोर्षा नदी के तट पर सत्र निर्माण कर विश्राम करने दिया।

कुछ दिन पश्चात् महाराज लक्ष्मीनारायण रोगाक्रांत होकर बुरी स्थिति में पहुँच गए। औषधि से कुछ लाभ नहीं हुआ गुरुदेव ने आकर देखा और राजा के सिर पर हाथ रखकर कहा–''भगवान कृष्ण की कृपा से तुरंत स्वस्थ हो जाओगे।'' बस कुछ दिनों में राजा स्वस्थ हो गए। इस घटना से गुरुदेव के प्रति राजा की आस्था और विश्वास अधिक दृढ़ हो गए। राजा ने गुरुदेव को रहने के लिए दामोदरपुर नामक स्थान पर सुंदर सत्र निर्माण कर दिया। गुरु दामोदर की महिमा दूर–दूर तक प्रचारित हुई। उनको देखने और शरण ग्रहण करने के लिए हर रोज असंख्य लोग आने लगे। आखिर महाराज लक्ष्मीनारायण ने गुरुदेव के लिए एक स्थायी सत्र निर्माण करने की योजना बनाई। इसके अनुसार गराघाट नदी के पूर्व दिशा में पिता महाराज नरनारायण द्वारा निर्मित एक ऊँचे 'ढाप' पर एक विशाल सत्र का निर्माण कर दिया, जिसमें सत्र के लिए सारी सुविधाएँ उपलब्ध हुई। सत्र संचालन के लिए आवश्यक सामग्रियाँ राजा के भंडार से नियमित रूप से उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था की गई। भितरुवाधाप सत्र का द्वारोद्घाटन भी धूम–धाम से हो गया। धीरे–धीरे सत्र ने एक महान तीर्थक्षेत्र (बैकुण्ठधाम) का रूप ले लिया। इस प्रकार महाराज लक्ष्मीनारायण की सहायता से संतगुरु दामोदरदेव ने समाज संस्कार और एकेश्वरवादी धर्म प्रचार करने लगे। आखिर महाराज लक्ष्मीनारायण ने भी अपने परिवार सहित गुरुदेव की शरण ग्रहण की। संत गुरु दामोदरदेव ने कोचबिहार में राजगुरु का आसन प्राप्त कर लिया। भितरुवाधाप सत्र के बाद में बैकुण्ठपुर सत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ जो आज भी विद्यमान है। धीरे–धीरे गुरुदेव की उम्र बढ़ती गई। अपना धर्म और सत्र का अधिकार उनके विद्वान शिष्य बैकुण्ठनाथ भट्टाचार्य याने भट्टदेव को औपचारिक रूप से प्रदान किया। इस प्रकार श्रीमंत शंकरदेव की तरह जीवन के अंतिम समय निश्चिंत होकर हरिभजन कीर्तन तथा भागवत मतों से कामरूप राज्य को पावन बनाकर अपने भितरुवाढाप सत्र में सन् १५९८ई. के अर्थात् १५२० शकाब्द के वैशाख महीने के शुक्ल प्रतिपदा के दिन ११० वर्ष की आयु में परमेश्वर के चरणों में लीन हो गए।

मनोरमा – दादाजी! दामोदर गुरु ने कुछ लिखा था या नहीं?

दादजी – अब तक उनकी कोई रचना नहीं हुई है, परन्तु उनकी प्रेरणा से कई लेखकों ने कामरूपी भाषा में साहित्य सृजन किया था। उनमें भट्टदेव, गोपाल मिश्र, हरिदास, रामराय, नीलकंठ आदि प्रमुख थे।

उनमें बैकुण्ठनाथ भागवत भट्टाचार्य याने भट्टदेव सबसे श्रेष्ठ साहित्यकार थे। उनके बारे में आगे बताऊँगा। आज समय हो गया है। राम...राम....

तीनों – राम... राम...

● ब्रह्मसत्र तैतलिया, गुवाहाटी (असम)

तनिक न लगे रुपैया

कविता : डॉ. राकेश चक्र

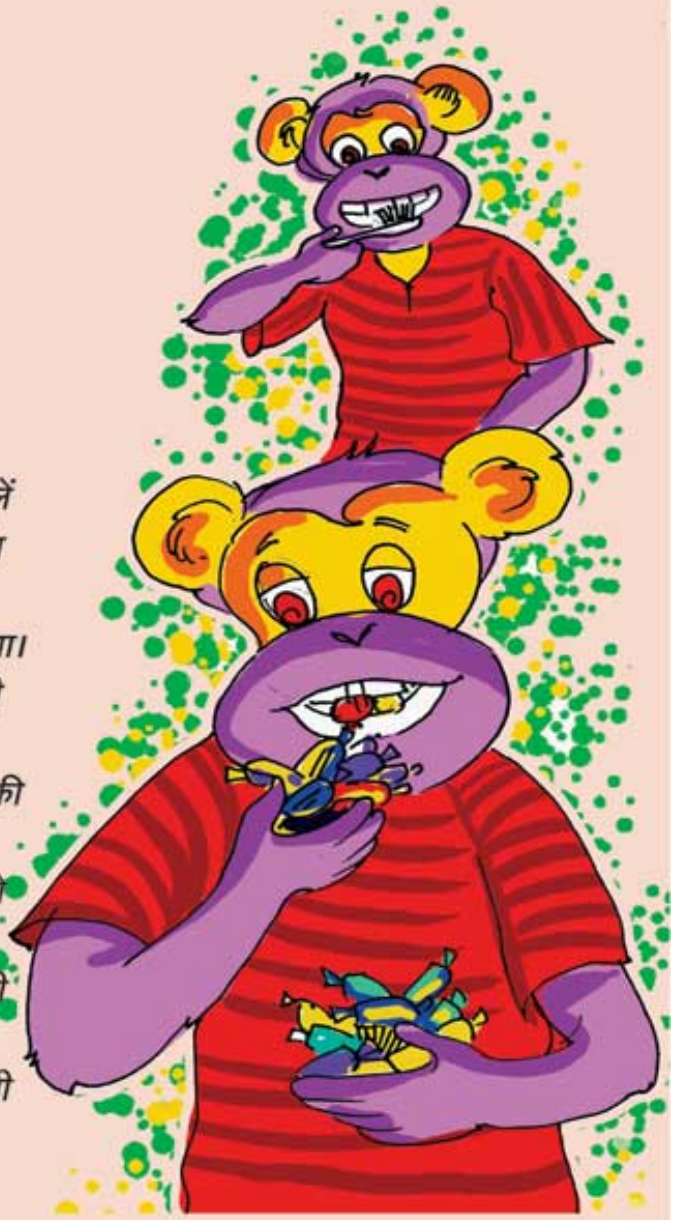

बिना ब्रश किये
रोज रात को
पिन्टू बन्दर सो जाते।
टॉफी, चॉकलेट
खूब लुभायें
जमकर वे तो हैं खाते।
सुबह देर से
जगकर के वह
चाय चुस्कियाँ खूब लगाते
फिर जाकर वह शौचालय में
आय-उई का स्वर गुंजाते।
जोर लगाते
खूब देर तक
पेट गड़बड़ी फिर भी पाते।
अक्सर रहती कब्ज गैस तो
दाँतों की घिरतीं बीमारी
हाय-हाय फिर करते
दुखी रहें बापू महतारी।
आये दिन वह दुख को झेलें
जाते हैं डाक्टर की शरणा
देवें भारी फीस
होय समय का नित ही हरणा।
मिले एक दिन खरगू योगी
पिन्टू से यूँ बोले-
''साफ-सफाई करो दाँत की
सोने से तुम पहले
सदा रात को जल्दी सोओ
जगो, सूर्य से पहले
जग करके तुम पीओ पानी
पेट भराऊ भैया
आय-उई सब मिट जायेंगी
तनिक न लगे रुपैया।''

- मुरादाबाद (उ.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१८** वर्ष २०१६ के पश्चात् प्रकाशित **बाल उपन्यास की पुस्तक हेतु** प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार** के नाम से **४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३१, मार्च २०१९** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित हैं।

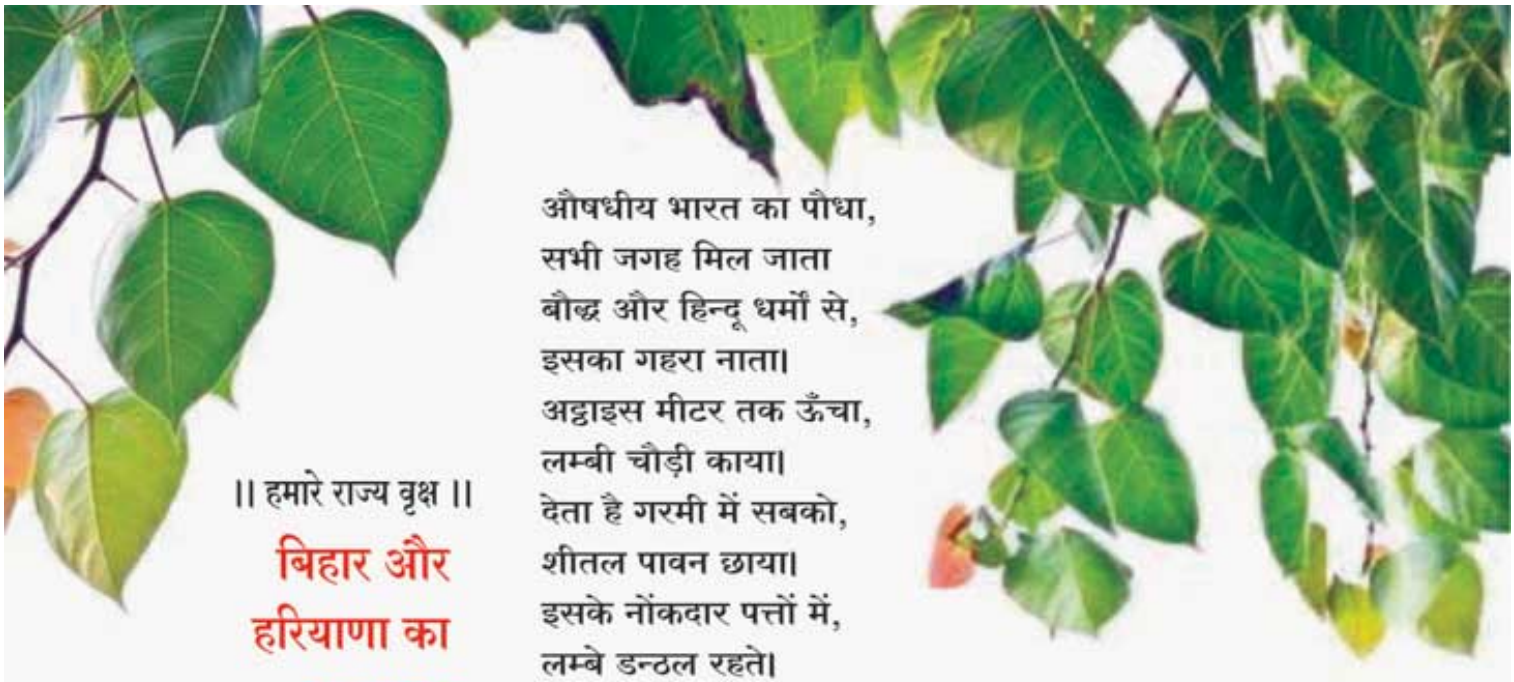

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

बिहार और
हरियाणा का
राज्यवृक्ष

पीपल

डॉ. परशुराम शुक्ल

औषधीय भारत का पौधा,
सभी जगह मिल जाता
बौद्ध और हिन्दू धर्मों से,
इसका गहरा नाता।
अट्ठाइस मीटर तक ऊँचा,
लम्बी चौड़ी काया।
देता है गरमी में सबको,
शीतल पावन छाया।
इसके नोंकदार पत्तों में,
लम्बे डन्ठल रहते।
पीपर पात सरित मन डोला,
ऐसा तुलसी कहते।
लाल जामुनी गोल-गोल फल,
सारे पक्षी खाते।
और बीट कर दीवारों पर,
पौधे नये उगाते।
अंग सभी उपयोगी इसके
औषधि खूब बनाते
नेत्र रोग से त्वचा रोग तक,
जड़ से दूर भगाते।।

• भोपाल (म.प्र.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना वर्ष २०१६ में की गई।

वर्ष २०१८ के लिए यह पुरस्कार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बालो और किशोरों की भूमिका पर आधारित प्रसंग के लिए निश्चित किया गया है। आपकी रचनाएँ (बाल कहानी) सादर आमंत्रित हैं।

कृपया ध्यान दें

- आपकी रचना बाल कहानी वह अप्रकाशित, अप्रसारित मौलिक हो, इसे आप स्वयं प्रमाणित करके भेजें।
- रचना हिन्दी भाषा में हो। (अनूदित रचनाएं न भेजें।)
- रचना हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो।
- लिफाफे पर 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१८ हेतु' अवश्य लिखें।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र को होगा। जो किसी विशेषांक या स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी संभव है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाकारों को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००/- रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

रचनाएं ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर भेजिए।

दंतकथा

यानी दांतों की रोचक जानकारी

सचित्र प्रस्तुति-
संकेत गोस्वामी

तुम्हारी मुस्कुराहट तब सुन्दर लगेगी जब उसमें चमकते करीनेदार दांत शामिल हों..

अब उस मुस्कुराहट की कल्पना करो जब कोई कैविटी लगे, पीले, टूटे या गिरे हुए दांत होने पर हंसे...

थोड़ा अजीब लगेगा है ना?

दांत हमारे शरीर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, और दांत की बनावट कुछ ऐसी होती है-

इनेमल - दांत की बाहरी परत को कहते हैं. यह कठोर होती है.

डेंटाइन - यह दांत की दूसरी परत है. जो इनेमल से नरम होती है.

पल्प - दांतों का बहुत जरूरी हिस्सा है. इसमें नसें और मांसपेशियां होती है. इसी से दांत जिन्दा रहते हैं.

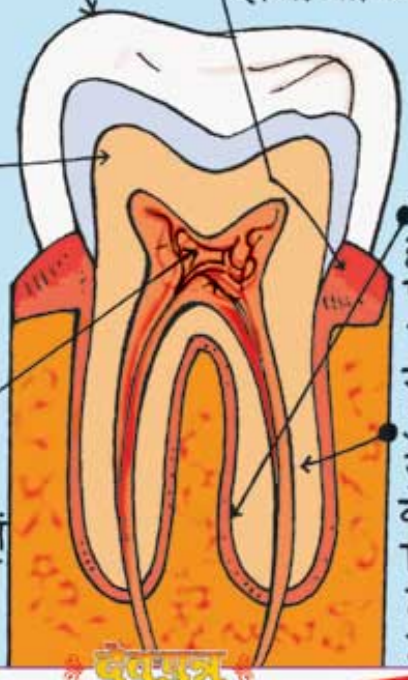

मसूड़े (गम) - गुलाबी रंग के होते हैं और दांतों को मजबूती से पकड़े रहते हैं. ये ज्यादा दबाव के वक्त दबाव को ऐब्जार्ब (सोखना) करने की कोशिश करते हैं.

सिमेंटम - यह हड्डी की पतली परत होती है. यह जड़ों की रक्षा करती है.

जड़ - ये मसूड़ों के नीचे छिपी होती हैं.

स्वस्थ दांत इस बात पर निर्भर करते हैं कि हम खाते क्या हैं?

कैल्शियम दांतों को मजबूत बनाने वाला खनिज है. दूध, घी, पनीर, चीज और पत्तेदार सब्जियों- जैसे पालक, बीन्स साथ ही राजमा, सोयाबीन और तली मछली में बहुत कैल्शियम होता है.

कच्ची सब्जियां, सेब और गाजर भी जो खाने में इस्तेमाल करते हैं...

...उनके दांतों को मजबूती मिलती है. खूब चबा-चबाकर खाने से दांतों का व्यायाम होता है और मसूड़ों की दांतों पर पकड़ बेहतर होती है.

बच्चों में दांतों के दर्द की समस्या ज्यादा होती है क्योंकि वे नरम और उबले भोजन ज्यादा खाते हैं जो निगलने में तो आसान होते है लेकिन चबाने लायक नहीं होते.

सामान्य मानव जीवन में दो बार दांत आते हैं. शुरुआती दांतों को 'दूध के दांत' कहते हैं.

और उसके बाद के दांतों को 'स्थायी दांत' कहते हैं. जो 17 से 21 वर्ष की उम्र के बीच आ जाते हैं. लेकिन 100 वर्ष की आयु पार कर लेने वाले कई बुजुर्गों के जीवन में तीसरी बार भी दांत आते देखे गए हैं.

दुनिया भर में ढ़ेर सारी बीमारियां हैं लेकिन दांतों से जुड़ी बीमारियां लोगों में सबसे ज्यादा होती हैं. इनका मूल कारण हैं-मीठे पदार्थ. खासतौर पर वे जो शुद्ध रूप में चीनी से ही बने होते हैं. ये दांतों के लिए बुरे साबित होते है. दांतों की सुरक्षा के लिए उनसे बचना ही ठीक है.

ये विचित्र लग सकता है लेकिन प्राचीन मिस्र में तो दांत दर्द के लिए कहा जाता था कि- 'राक्षस ने कीड़े का रूप लेकर दांत पर हमला कर दिया है'

वर्षों से नकली दांत भी प्रचलन में हैं. ये दंत-चिकित्सक की मदद के बिना लगाए और हटाए जा सकते हैं. ये टाइटेनियम के बने होते हैं और मसूड़ों में फंसाए जा सकते हैं. इनमें कीड़े नहीं लगते. लेकिन इनमें ठंडे और गर्म का अहसास भी नहीं होता.

दांत की हर समस्या से बचना चाहते है तो आपको मेंढक बनना पड़ेगा, क्योंकि सारी दुनिया में पाये जाने वाला मेंढक ऐसा प्राणी है, जिसके दांत ही नहीं होते

दांतों को सबसे ज्यादा हानि पहुंचाते है- प्लाक.
प्लाक ऐसे बैक्टीरिया या जर्म होते हैं जो दांतों और मसूड़ों के आस-पास जमा हो जाते हैं. जब खाई हुई चीजों के कण दांतों के बीच फंस जाते हैं तो ये उन पर हमला शुरु कर देते हैं. धीरे-धीरे फैलकर ये दांतों को सड़ा देते हैं.

स्वस्थ दांतों के लिए रात के भोजन के बाद ब्रश कर लेना चाहिए.

मनुष्य के दांत हर वक्त नहीं बढ़ते लेकिन कुतरने वाले प्राणी चूहे और गिलहरी के दांत हर क्षण बढ़ते रहते हैं. अगर वे कुतरना बंद कर दें तो बिना घिसे वे इतने बड़े हो जाऐंगे कि इन प्राणियों की जान चली जाएगी.

और अब ये भी जान लो कि डॉल्फिनें अपने दांत और जबडों का उपयोग पानी में तरंगों को पकड़ने के लिए भी करती हैं.
क्यों है ना मजेदार ?
दंत कथा...

समाप्त

छोटी बड़ी

उड़ी उड़ी रे पतंग मेरी उड़ी रे!

बच्चो, मकर सक्रांति पर नील गगन में उड़ रही पतगों को छोटी से बड़ी क्रम में जमाओ।

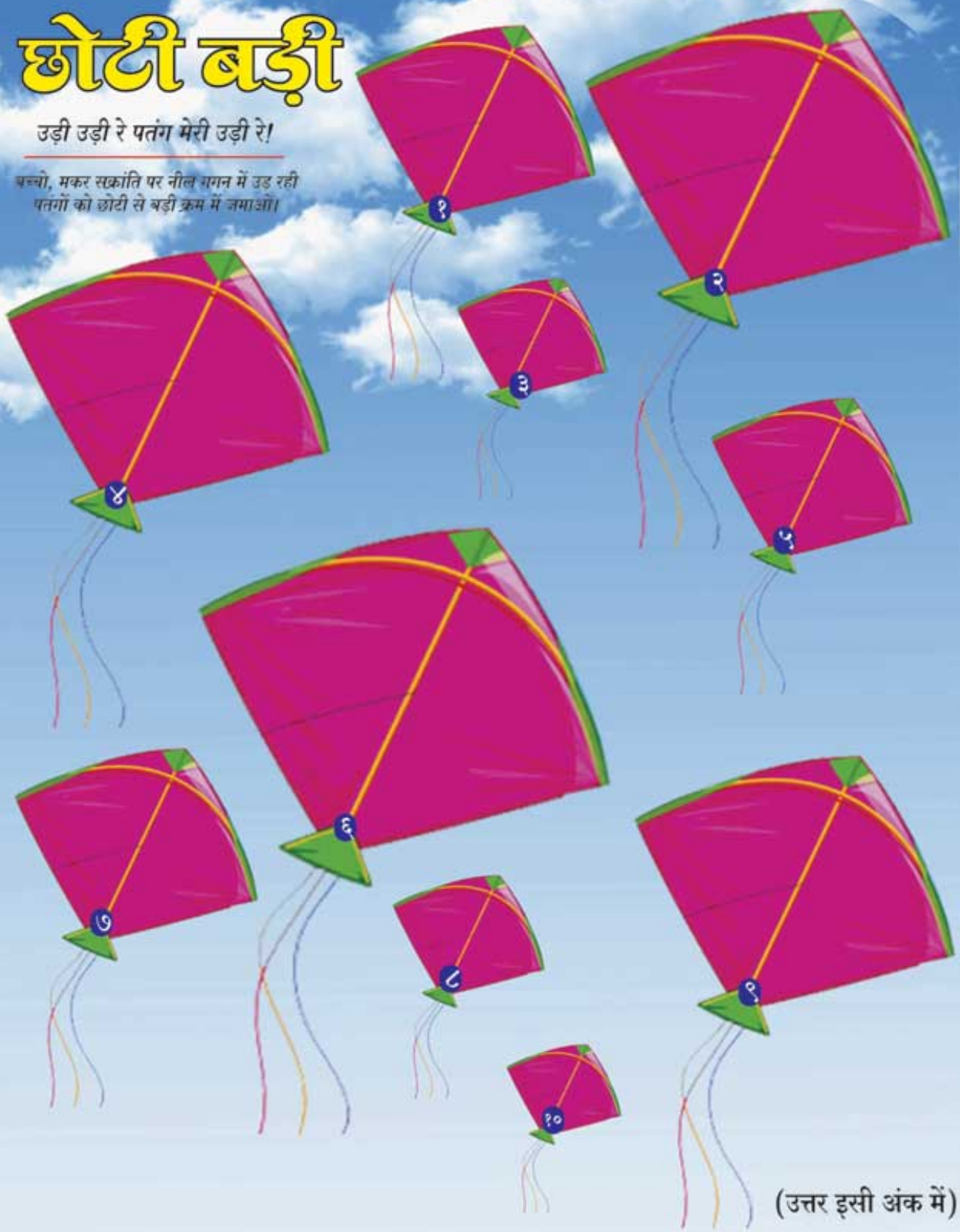

(उत्तर इसी अंक में)

।। बाल प्रस्तुति।।

सहायता

कहानी : शुभम् वैष्णव

''साहब! मेरे बेटे की तबीयत बहुत ज्यादा खराब है। वह अस्पताल में भर्ती है मुझे अभी ५ हजार रु. की सख्त जरूरत है। अगर आप मेरी थोड़ी सहायता कर देते तो अच्छा होता।

मेरी अगली पगार में से आप ५ हजार काट लेना'' वाहन चालक प्रेमराज ने अपने मालिक से विनती करते हुए कहा।

''देखो मैं तुमको ५ हजार दे देता परन्तु अभी मेरे पास ५ हजार नहीं है क्योंकि मैने अभी अपना सारा नगद रुपया जमीन व मकान की खरीदी में लग गया है। मालिक ने वाहन चालक प्रेमराज से मुँह बनाते हुए कहा।

''कोई बात नहीं साहब! मैं कही ओर से व्यवस्था कर लूंगा।'' इतना कहकर प्रेमराज दुखी मन से चला गया। थोड़ी देर बाद गोलू उसके पिताजी के पास आया और कहने लगा ''पिताजी! मुझे दस हजार रु. चाहिए।''

''लेकिन क्यों बेटा!''

''पिताजी! मुझे मेरे दोस्तों को सरप्राइज पार्टी देना है।''

राजेश ने अपनी जेब से १५ हजार की गड्डी निकालकर गोलू के हाथ में थमा दी।

''जाओ, पार्टी कर लो। पूरे १५ हजार हैं अगर कम पड़े तो और मांग लेना राजेश ने कहा।

बहुत बहुत धन्यवाद पिताजी। गोलू अपने पिता के गले लगते हुए कहने लगा।

बाहर गाड़ी साफ करता वाहन चालक प्रेम राज सब कुछ देख रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि साहब के पास अपने बेटे को फिजूलखर्ची के लिए तो रुपए है परन्तु हम जैसे गरीबों की मदद के लिए उनकी जेब में एक रुपया भी नहीं है। जबकि रुपयों की आवश्यकता तो मुझे है आखिरकार क्यों अमीर लोग गरीबों की सहायता करने से

हिचकिचाते हैं?

प्रेम राज दादा आपका बच्चा बीमार है न? यह लो उसके उपचार के खर्च के लिए १५ हजार। गोलू ने प्रेम राज दादा के हाथ में १५ हजार रखते हुए कहा।

लेकिन आप ने तो यह रुपए दोस्तों के साथ पार्टी करने के लिए–लिये हैं ना प्रेम राज दादा ने आश्चर्य चकित होते हुए कहा।

मैंने आपकी और पिताजी की बातें सुन ली थी। पिताजी के पास रुपए थे फिर भी उन्होंने आप से मना कर दिया और आपको इस तरह निराश लौटना मुझे अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने पिताजी से झूठ बोलकर यह रुपए लिए। पिताजी को आप यह बात मत बताना'' गोलू ने प्रेम राज दादा का हाथ पकड़ते हुए कहा।

गोलू की दानवीरता देखकर प्रेम राज दादा की आँखों में आंसू आ गए और वे मन ही मन गोलू को आशीर्वाद देने लगे।

अब उन्हें लग रहा था कि आज भी समाज में अच्छे लोग भी हैं जो बुरे समय में हर किसी का साथ देते हैं आज भी समाज में मानवीयता बाकी है।

–सवाई माधोपुर (राज.)

इन्हें पहचानिए

●राजेश गुजर

बच्चों! नीचे बने ९ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पहचान कर उनके नाम बताओ?

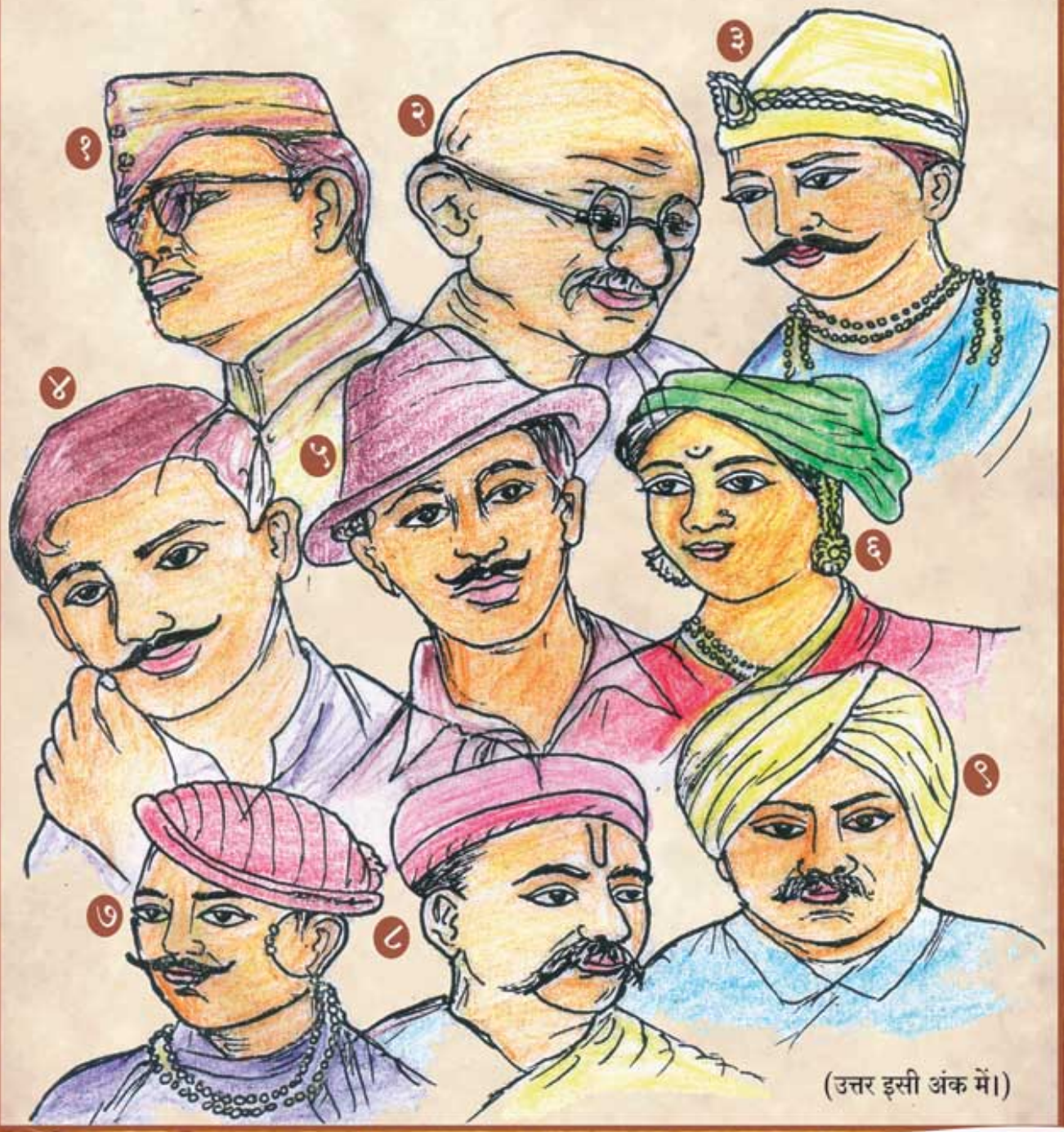

(उत्तर इसी अंक में।)

नन्हा सैनिक

कविता : कु. हर्षिता यदु

मैं नन्हा सैनिक भारत का,
वल्लभ, सुभाष, गाँधी-सा।
पुजारी हूँ पौरुषता का,
केवल एक लालसा है मेरी,
रहे भारत पर फहराता,
तिरंगा प्यारा स्वतंत्रता का।
मैं नन्हा सिपाही भारत का,
शास्त्री, सुभाष गाँधी सा।
कदम बढ़ाता चट्टानों में,
सांसे भरता तूफानों में,
आये संकट जब राहों में,
ठोकर से दू उड़ाँ धूल-सा।
मैं नन्हा सैनिक भारत का,
कलाम, सुभाष गाँधी-सा।
आँच न आने दूँ भारत पर,
जब तक सीने में साँस रहे,
खेल जाऊँ अपने प्राणों पर,
बन नन्हा अभिमन्यु सा,
मैं नन्हा सिपाही भारत का,
वल्लभ, सुभाष, गाँधी-सा।

- राजिम (छ.ग.)

आओ, चलें भ्रमण कर देखें

कविता: सोमदत्त त्रिपाठी

गरिमामयी तीर्थमय माटी, तन अवयव सम विविध प्रदेश।
आओ चले भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश॥

हैं प्रदेश राजस्व इकाई मिटते बनते इनके रूप,
किन्तु प्राकृतिक भू-रचना में निहित सलोना मातृस्वरूप,
इस भौतिक स्वरूप का दर्शन, करता आत्मिक छवि विनिवेश-
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश॥

है विराजता जब हृदयों में यह भौतिक सामाजिक रूप,
तब आध्यात्मिक छवि आत्मा में पा लेती विराट का रूप,
यह विराट से तन्मयता ही शाश्वत देशभक्ति-संदेश।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश॥

प्रति प्रदेश की निज विशेषता, सब का है अपना परिवेश,
गौरवमय इतिहास सभी का, सब के अपने भाषा-वेश,
निज भाषा-साहित्य जगाता, राष्ट्रभाव का दृढ़ उन्मेष।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश॥

सब में रीति-रिवाज विविधता, स्वादभरे बहुविधि आहार,
सामाजिकता में कुटुम्बपन को प्रकटाता जन व्यवहार,
व्यवहारों में आत्मभाव तो व्यंजन में मातृत्व विशेष।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश॥

काया-कद, तन-वर्ण, विविधता, भौगोलिक परिधान-विधान,
ऋतुओं की प्राकृतिक विविधता, में भी निहित ऐक्य का गान,
श्रुति सरिताएँ मातृभूमि की, तीर्थ विरच देती संदेश।
आओ चलें भ्रमण कर देखें निज आँखों निज भारत देश॥

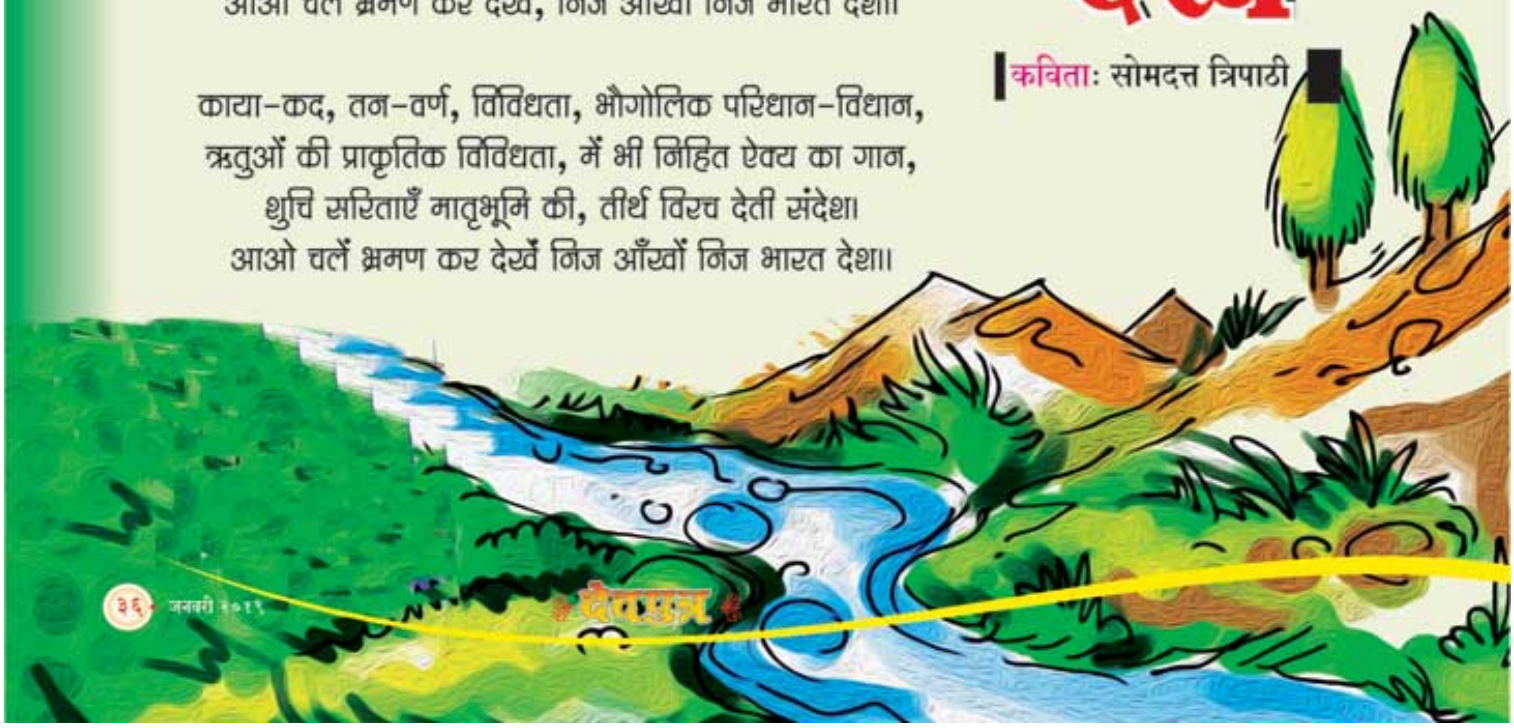

यहीं एकता अनेकता में सत्संस्कृति शाश्वत सद्भाव,
गौ, गंगा, गीता, गायत्री, तीर्थ जगाते आत्मिक भाव,
भाव भरे अगणित हृदयों में, उदित राष्ट्रभक्ति उन्मेष।
आओ चलें भ्रमण कर देखें निज आँखों निज भारत देश।।

धर्म विविधतामय उपासना, पर जीवन उद्देश्य समान,
दिखता पर्वों-त्यौहारों में, समरसता-पोषित विज्ञान,
छिपता नहीं छिपाए, पावन माटी-पानी का उन्मेष।
आओ चले भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश।।

मुदित विकस कर कृषि में कमला महकाती माटी का प्यार,
बरसाती रक्षण-पोषण के, भेदरहित जीवन-उपहार,
चिर उपकारी मातृभूमि के ऋण का समझें मूल्य विशेष।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश।।

धर्म, ज्ञान, संस्कृति, शिक्षा की गूढ़ महत्ता कहे अतीत,
देवालय, पूजा-परिसर में होता है वह तथ्य प्रतीत,
अब विद्यालय नव देवालय कहें मनुजता के सन्देश।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश।।

भाँति-भाँति की खनिज सम्पदा, करती प्रान्तों को सम्पन्न,
नवल सोच, शोधों मय विद्या, से नर-नारी देश प्रपन्न,
जहाँ एकता अनेकता में हमें बनाती राष्ट्र विशेष।
आओ चलें भ्रमण कर देखें, निज आँखों निज भारत देश।।

- भोपाल (म.प्र.)

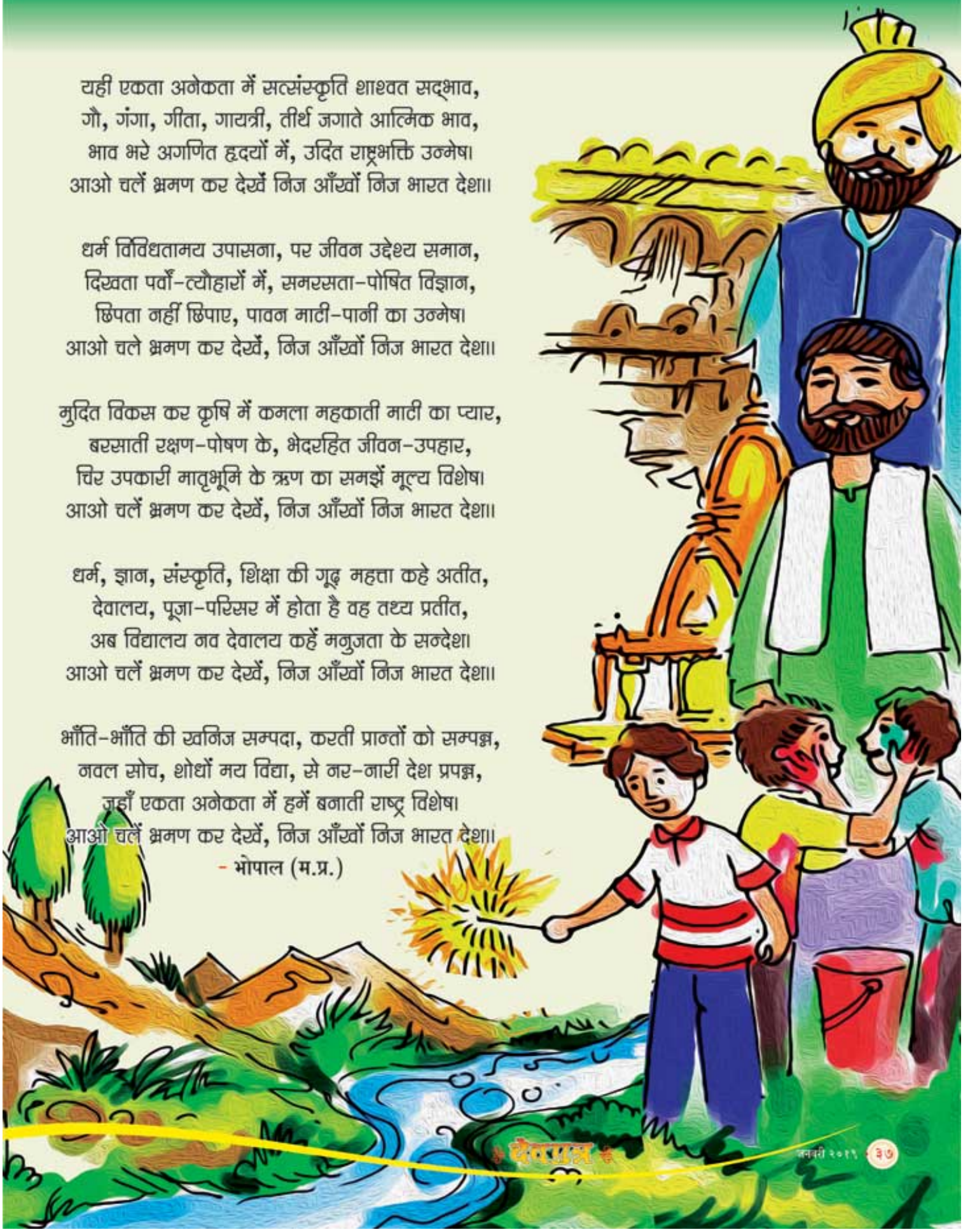

टुनकी बिल्ली और सरपटिया अजगर

कहानीः इन्जी. आशा शर्मा

टुनकी बिल्ली और सरपटिया अजगर में अब ठन चुकी थी, नदी के किनारे जिस बरगद के घने पेड़ पर टुनकी रात को चैन से सोया करती थी सरपटिया भी अक्सर उसी पेड़ पर टंगा रहता था। सरपटिया की नजर नदी में रहने वाली मछलियों और मेंढकों पर तो रहती ही थी। पेड़ पर रहने वाले पक्षियों के अंडों पर भी वह अपनी बुरी निगाह रखता था। बस। यही बात टुनकी को अखरती थी।

अरे सरपटिया डायन भी सात घर छोड़ देती है और तू है कि अपने ही पेड़ पर रहने वाले पक्षियों के अंडे तक खाने की फिराक में रहता है। माना कि ये तेरा भोजन है लेकिन जरा मेहनत कर...आलस त्याग...वहाँ तालाब में जाकर अपना शिकार ढूंढ ना... इन बेबस अंडों पर क्यों दादागिरी दिखाता है। टुनकी उसे ताने दिया करती थी।

इसे तो एक दिन सबक सिखा कर रहूँगा। सरपटिया ने मन ही मन ठान लिया था।

सरपटिया की हरकतें देख कर टुनकी अपने होने वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए परेशान रहने लगी। उसे पक्का यकीन था कि सरपटिया उन्हें नुकसान पहुँचाने की कोशिश जरूर करेगा। वह कुछ उपाय सोचने लगी।

क्यों न नदी किनारे खेत वाले किसान रामसिंह से दोस्ती गांठी जाये...विचार करती टुनकी खेत की तरफ चल दी।

रामसिंह अपने खेत में चूहों से बहूत परेशान था। वे उसकी खड़ी फसल तो बर्बाद करते ही थे, खलिहानों में रखे अनाज को भी चट कर जाते थे। टुनकी को देखते ही रामसिंह का चेहरा खिल गया। वह फौरन एक कटोरे में दूध भर कर ले आया। टुनकी ने गटगट करके सारा दूध पी लिया और एक लंबी सी डकार मार कर रामसिंह की तरफ देखकर मुस्कुराई। अब दोनों में दोस्ती हो गई।

टुनकी के खेत में रहने के कारण अब चूहों ने रामसिंह के खेत में आना कम कर दिया था। टुनकी के आने वाले बच्चों को लेकर रामसिंह भी बहुत उत्साहित था।

कुछ ही दिनों में टुनकी का परिवार बड़ा हो जाएगा...फिर मेरी फसलों को चूहों से कोई नुकसान नहीं हुआ करेगा। यह सोचकर वह टुनकी का और भी अधिक खयाल रखने लगा।

उधर सरपटिया को जब कई दिनों तक टुनकी दिखाई नहीं दी तो वह भी सोच में पड़ गया।

जरूर टुनकी किसी सुरक्षित जगह पर चली गई ताकि अपने बच्चों को मेरी नजर से बचा सके...लेकिन मैंने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं....अपने अपमान का बदला तो मैं लेकर ही रहूँगा। सरपटिया टुनकी की खोज में निकल पड़ा।

टुनकी जानती थी कि सरपटिया उसे तलाश करने की पूरी कोशिश कर रहा होगा। उसने रामसिंह के खेत में सबसे ऊँचे वाले टीले पर जिसकी मिट्टी बहुत कठोर थी को खोद कर अपने रहने के लिए मांद बनाई ताकि सरपटिया पर दूर से नजर रख सके।

नियत समय पर टुनकी ने तीन प्यारे-प्यारे बच्चों को जन्म दिया। रामसिंह भी सबका बहुत ध्यान रखता था।

कुछ दिन बीत गए। टुनकी खुश थी कि अब तक सरपटिया की निगाह उन पर नहीं पड़ी थी। लेकिन उसकी ये खुशी ज्यादा दिन तक नहीं रह सकी। आखिर सरपटिया ने उसे खोज ही लिया।

जीभ लपलपाते सरपटिया को अपनी तरफआते देखकर टुनकी के हाथ-पाँव फूल गए। उसके बच्चे अभी इतने बड़े नहीं हुए थे कि भागकर अपनी जान बचा सकें। वह अपने बच्चों को छोड़कर राम सिंह को बुलाने भी नहीं जा सकती थी। सरपटिया था कि उसकी मांद की तरफ बढ़ता ही चला आ रहा था।

सरपटिया ने सामने की तरफ से टीले पर चढ़ना शुरु कर दिया था। जैसे ही उसने मांद के अंदर अपना मुँह घुसाया, टुनकी ने एक जोरदार पंजा कस कर उसके जबड़े पर मारा। सरपटिया का संतुलन बिगड़ गया। वह नीचे गिर पड़ा। ऐसा दो तीन बार हुआ।

इस तरह तो टुनकी को जीत नहीं सकता...मुझे पीछे से वार करना होगा। मन ही मन योजना बनाता हुआ सरपअिया पलट गया।

सरपटिया इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं है...जरूर इसके दिमाग में कुछ पक रहा है... हो सकता है यह टीले के पीछे से आकर हम पर वार करे...इसे घूम कर टीले के पीछे जाने में थोड़ा समय

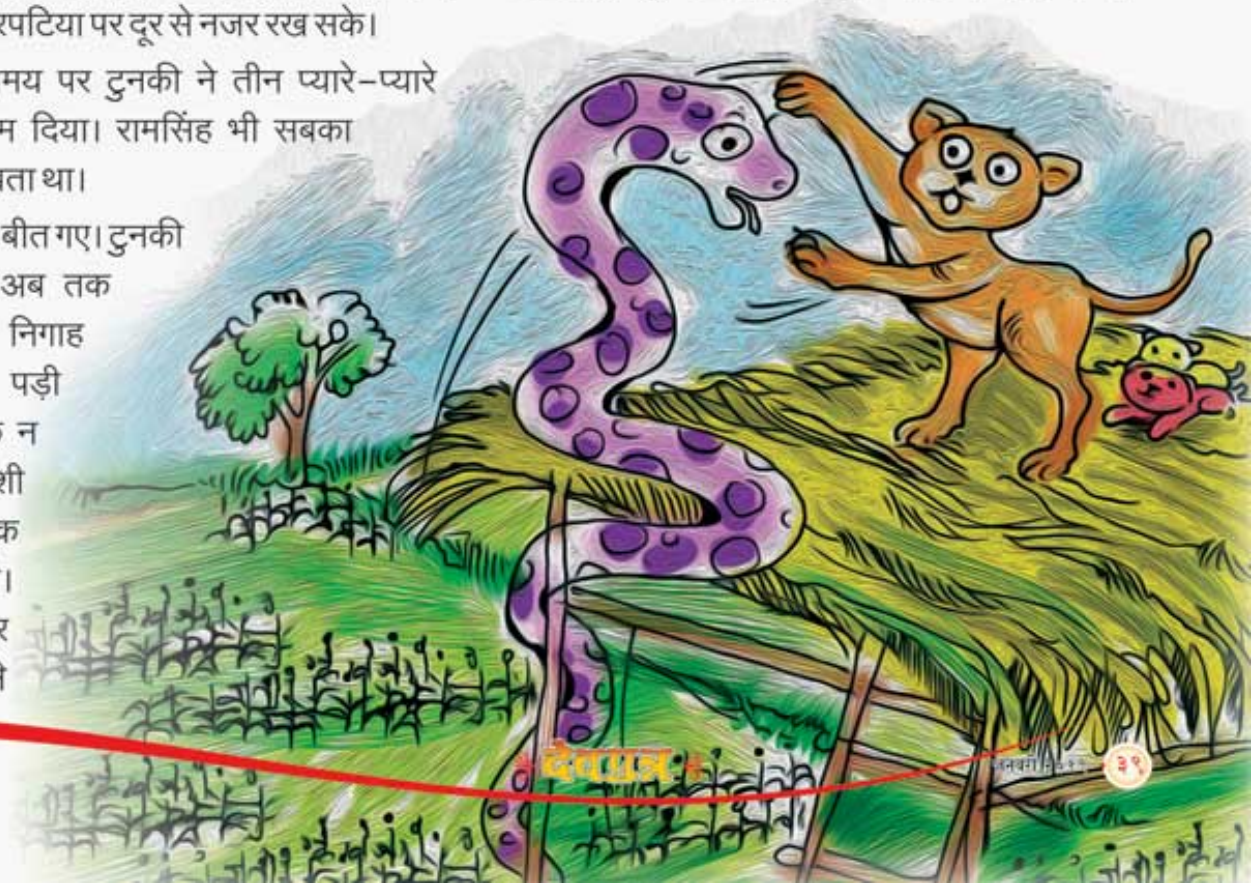

लगेगा... अब समय आ गया है कि मुझे रामसिंह की मदद लेनी चाहिए। सोचते हुए टुनकी ने अपने बच्चों को कंटीली तार से ढका और फिर उस पर कांटे वाली घास बिछा दी ताकि सरपटिया एकदम से उन पर झपट न पड़े। फिर बिना एक पल गवांए वह तेजी से रामसिंह की झोंपड़ी की तरफ दौड़ी। उसके हाव भाव से रामसिंह खतरे को भांप गया और उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

लगता है टुनकी डर के मारे भाग गई। मांद में तीन नरम-मुलायम बच्चों की कल्पना से ही सरपटिया की लार टपक पड़ी। सरपटिया ने उसे भागते हुए देख लिया था।

जैसे ही सरपटिया बच्चों पर झपटा, काँटों से उसका मुँह लहूलुहान हो गया। वह दर्द से बिलबिला उठा। गुस्से से भरा सरपटिया फिर से उन पर वार करने ही वाला था कि रामसिंह ने पीछे से आकर उसकी पूँछ पकड़ी ली। अचानक हुए इस हमले से सरपटिया घबरा गया और अपनी पूँछ छुड़ाने के लिए जोर-जोर से फुंफकारने लगा। रामसिंह ने उसे पूँछ से पकड़ कर तेजी से तीन-चार झटके दिए और घायल सरपटिया का दम निकल गया। रामसिंह ने उसके बेजान शरीर को उछाल कर फेंक दिया।

टुनकी ने रामसिंह की तरफ कृतज्ञता से देखा और अपने बच्चों की जान बचाने के लिए उसे धन्यवाद दिया।

मुसीबत के समय एक दूसरे की मदद करना ही तो सच्ची दोस्ती कहलाती है, कहते हुए रामसिंह ने उसे बच्चों सहित प्यार से गोद में उठा लिया।

म्याऊँ-म्याऊँ करते तीनों बच्चे रामसिंह के हाथ को प्यार से चाटने लगे।

– बीकानेर (राज.)

सही उत्तर

।। संस्कृति प्रश्नमाला ।।

(१) सुमित्रा (२) वृहन्नला (३) आयरलैण्ड (४) धनुषकोटि
(५) बृहस्पति (६) एक साल (७) दिल्ली में कुतुब मीनार के पास
(८) मदन लाल ढींगरा (९) जयमल्ल राठौड़ (१०) वर्ष १९५१

●●●●●

।। उलझ गए! ।।

महिला और बच्चा आपस में बहन और भाई हैं।

●●●●●

।। छोटा बड़ा ।।

१०,३,८,५,१,७,९,४,२,६

●●●●●

।। इन्हें पहचानिए ।।

(१) सुभाषचंद्र बोस (२) महात्मा गांधी (३) तात्या टोपे
(४) चंद्रशेखर आजाद (५) भगतसिंह (६) रानी लक्ष्मीबाई
(७) नाना साहेब पेशवा (८) बाल गंगाधर तिलक (९) लाला लाजपत राय

●●●●●

।। चित्र-विचित्र ।।

दादा- १, २, ३, ४, ७, ८, ९,०
पोता - १, २, ३, ४, ५, ६, ८, ९, ०

|| २४ जनवरी : बालिका दिवस ||

राष्ट्रीय बालिका दिवस

कविता : डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

चौबीस जनवरी बालिका दिवस आता
इन्दिरा गांधी जी को इसका श्रेय जाता
बेटी से अपना बेहतर समाज बने
सच्चा अच्छा जीवन उसका आज बने

नारी शक्ति दुनिया में जानी जाये
असीम प्रतिभाओं से पहचानी जाये
बालिका दिवस मनाना उद्देश्य यही है
चौबीस जनवरी का तो महत्व यही है

बिटिया अपनी नेक बने और खूब पढ़े
मंजिल के आगे ही आगे खूब बढ़े
माता पिता के सपने सब पूरे कर दे
खुशी खुशी यह सबके दामन भर दे

चलती समग्र बालिका विकास योजना
सबल करे धनलक्ष्मी विकास योजना
लड़का लड़की भेदभाव अब नहीं करना
जागरूक बस प्यारी बिटिया को करना

समझो बेटी कुदरत का है उपहार
कभी नहीं तुम करना इसका तिरस्कार
आत्म निर्भर हो बेटी संकल्प दिलाते
चौबीस जनवरी बालिका दिवस मनाते।।

– भोपाल (म.प्र.)

कैसा चूहा?

चित्रकथा - देवांशु वत्स

चुन्नू-मुन्नू की पतंग

कविता : दिनेश विजयवर्गीय

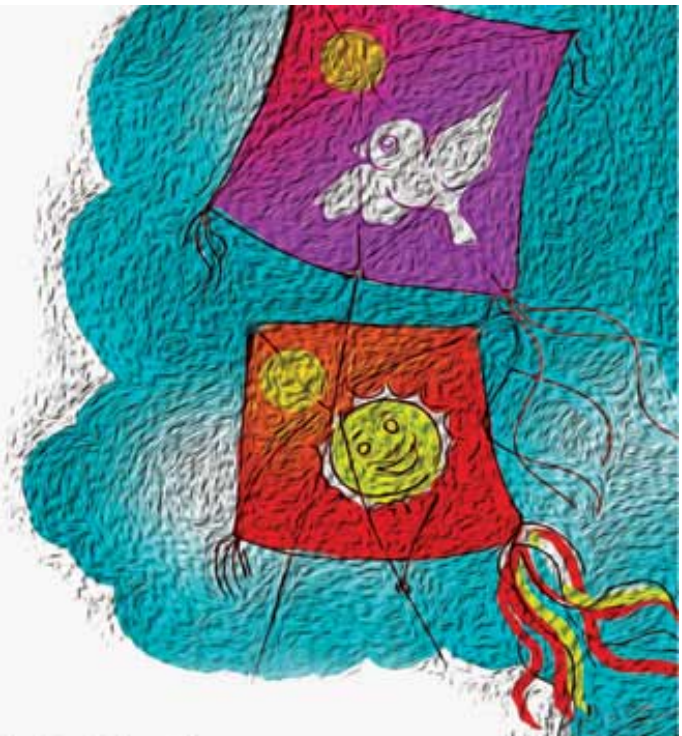

चुन्नू-मुन्नू छत पर पहुंचे
लेकर अपनी डोर पतंग
रूप रूपाली कागज वाली
थी चुन्नू की बड़ी पतंग।

पन्नी वाली रंगों वाली
थी मुन्नू की गजब पतंग
तरह-तरह के चित्रों वाली
आकर्षक थी खूब पतंग।

संग हवा के दोनों पहूंची
दूर गगन में उड़ी पतंग
चुन्नू-मुन्नू दोनों खुश थे
जब पेचों में फंसी पतंग।

चुन्नू का था मांझा अच्छा
जल्दी कटी मुन्नू की पतंग
जब कटी रुक न पाई
कह गई अलविदा पतंग।

चुन्नू-मुन्नू दोनों प्रसन्न थे
खेल भाव से थी उड़ी पतंग
चुन्नू-मुन्नू हंसे-हंसाये
कल उड़ायेंगें और पतंग।

– बूंदी (राज.)

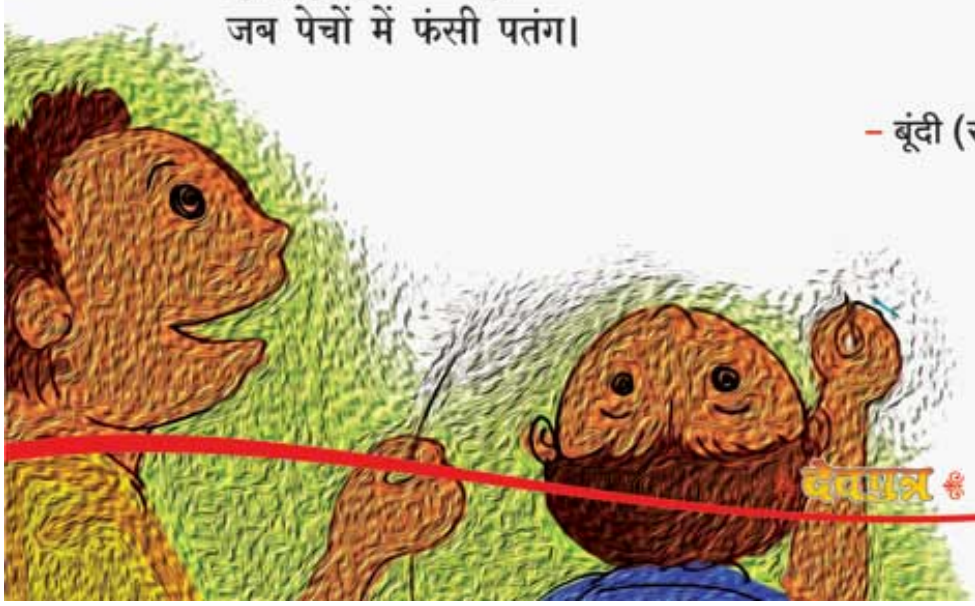

प्रताप सम्मान हेतु प्रविष्टि आमंत्रित

क्रांतिकारियों पर प्रचुर लेखन करने वाले कविश्रेष्ठ पं. छोटेलाल पाण्डेय (सतना) द्वारा क्रांतिकारियों पर काव्य सृजन को प्रेरित करने हेतु इस वर्ष भी प्रताप सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। प्रविष्टि स्वरूप क्रांतिकारियों पर लिखी कविताएं दिनांक ३१ मार्च, २०१९ तक प्रताप सम्मान २०१८ के नाम से

देवपुत्र ४०, संवाद नगर, इंदौर ४५२००१ (म.प्र.)

के पते पर सादर आमंत्रित हैं।

।। सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर पुरस्कार ।।

प्रथम पुरस्कार २१००रु. द्वितीय पुरस्कार १५००रु. तृतीय पुरस्कार ११००रु.

आपकी पाती

देवपुत्र का अक्टूबर २०१८ का अंक पढ़ा। मुख पृष्ठ का चित्र संदेश देता नजर आया। संपादकीय अति उत्तम लगी। कहानी मानवता, रोबो और टोटो, फोकटराम ने दावत उड़ाई खूब पसंद आई। कविताएं, प्रसंग, आलेख, चित्रकथा भी अतिप्रिय और रोचक लगीं।

● *बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर (उ.प्र.)*

****

जब जब देवपुत्र अंक पढ़ने को प्राप्त होता। प्रथम पृष्ठ पर अपनी बात हृदय स्पर्शी लगती है जिसमें अपनी बात में शिक्षाप्रद प्रसंग भी पढ़ने को मिलता। माह मई २०१८ के अंक में एक लकड़हारे का प्रसंग शिक्षा के साथ ही जानवर्धक भी लगा। डॉ. फकीरचंद शुक्ला द्वारा लिखित हास्य कहानी बुद्धू लौट आया में भोलापन, गाथा वीर शिवाजी की सिंह पिंजरे में, डॉ. बानो सरताज की पुलो की कहानी, सुमन ओबेरॉय द्वारा लिखित कहानी पिताजी आप बहुत अच्छे हैं, महापुरुषों की जीवन गाथा, भारत भगिनी और रवीन्द्रनाथ टैगोर गुरुदेव का संवाद बालोपयोगी लगा। सदा इसी प्रकार पठनीय प्रसार मिलता रहे इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ

● *भेरूलाला कनेरिया, मंदसौर (म.प्र.)*

प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस का देशभर में आयोजन

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार हेतु योग दिवस की तरह आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा घोषित प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में इंटरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन INO द्वारा आयुष मंत्रालय व सूर्या फाउण्डेशन के सहयोग से ११-१८ नवम्बर तक देश के विभिन्न प्रांतों में ३०० से अधिक जिलों में अनेक कार्यक्रम किये गये। जिसमें २५ लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया।

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस की प्रमुख गतिविधियां निम्न प्रकार हैं-

- ११ नवम्बर को सामूहिक मिट्टी स्नान (Mass Mud Bath) का देशभर में आयोजन जिसमें ७८० लोगों ने भाग लिया।
- सामूहिक मिट्टी स्नान का Asia Book of Record में नाम दर्ज हुआ।
- १२ से १७ नवम्बर तक देश भर में प्राकृतिक चिकित्सा परामर्श, शिविर, सेमिनार, रैली, KBSR प्रतियोगिता, आकाशवाणी लोकमत टी.वी. चैनल में भाषण चित्रकला प्रतियोगिता आदि का आयोजन।
- १८ नवम्बर को देश के विभिन्न जिला तहसील, कस्बा व गांवों (२००० स्थानों पर) प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस का आयोजन।
- दिल्ली व राज्यों में लगभग १०० समाचार पत्र/पत्रिका/साप्ताहिक टी.वी चैनल में कार्यक्रम का समाचार प्रसारित हुआ।

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा घोषित १८ नवम्बर का प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस कार्यक्रम इंटरनेशनल नैचुरोपैथी ऑर्गेनाइजेशन (INO) व आयुष मंत्रालय, के सहयोग से दिल्ली के डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन केन्द्रीय आयुष मंत्री श्रीपाद नाईक ने किया।

प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सूर्या फाउंडेशन व INO के चेयरमैन श्री जयप्रकाश अग्रवाल जी ने कहा देश में प्राकृतिक के समग्र विकास हेतु मैंने २००३ से २० दिन जल पर रहकर राजघाट पर भारत जगाओ सत्याग्रह किया। उसके बाद INO संगठन बना।

कार्यक्रम में अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक आचार्य लोकेश मुनि, अपर आयुष सचिव श्री प्रमोद पाठक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्री अश्विनी चौबे, INO राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनंत बिरादार, INO द्वारा नियुक्त प्राकृति चिकित्सा दिवस की ब्रैंड अम्बेसडर सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री इशा कोपीकर भी उपस्थित रहीं।

उद्घाटन सत्र के अन्त में कई गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा दिवस पर ७ प्राकृतिक चिकित्सकां को लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड (जीवन गौरव सम्मान) से सम्मानित किया गया।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१८

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड एवं अपना मोबाइल नं. अवश्य लिखें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें-

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१८
देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

मूल्य ३५०/-

देश हमारा – सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं बाल साहित्य विषयक कृतियों के संपादक (स्व.) श्री कृष्ण शलभ द्वारा संपादित इस कृति में देश के ११९ मूर्द्धन्य रचनाकारों की राष्ट्रीय बाल कविताओं का सुसंपादित संकलन है। यह एक चिर संग्रहणीय ग्रन्थ है।

प्रकाशन – नीरजा बाल साहित्य न्यास, ब्रज वीथी एन १६७–१६८, पैरामाउण्ट ट्यूलिप दिल्ली रोड़, सहारनपुर २४७००१ (उ.प्र.)

मूल्य ४०/-

स्वतंत्रता संग्राम – स्वनाम धन्य बाल साहित्य की अनेक अनमोल कृतियों से बालसाहित्य जगत में अमिट ख्याति प्राप्त (स्व.) श्री हरिकृष्ण देवसरे द्वारा शोधपरक, तथ्यात्मक, प्रमाणिक एवं बहुत कम लोगों को ज्ञात सत्यों से समृद्ध प्रश्नोत्तर शैली में रचित अद्‌भुत ग्रंथ जिससे बच्चे न केवल स्वतंत्रता संग्राम विषयक इतिहास जानेंगे अपितु देश भक्ति से ओतप्रोत भी बन सकेंगे।

प्रकाशन – डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा. लि.) एक्स ३० ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेज–२, नई दिल्ली ११००२०

मूल्य ६०/-

सारे जहाँ से अच्छा– बच्चों में राष्ट्रभक्ति भाव का जागरण करने में गीतों का बड़ा महत्व है। हम बस बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय गीतों चाहे वे फिल्मी हो या गैर फिल्मी गाते–गवाते, दोहराते राष्ट्रीयता का पाठ पढते रहे हैं यह परम्परा निरंतर चली आ रही है चलती रहेगी। श्री मधु हातेकर जी द्वारा परिश्रमपूर्वक ऐसे चयनित श्रेष्ठ गीतों को इस पुस्तक के संकलित कर प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशन –क्षितिज प्रकाशन, १६ कोहीनूर प्लाजा, एल फिन्स्टन रोड़, खड़की, पुणे ४११००३ (महाराष्ट्र)

मूल्य ७५/-

भगिनी निवेदिता– देवपुत्र के कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी द्वारा लिखित भारत पुत्री भगिनी निवेदिता के जीवन प्रसंगों पर सम्पूर्ण बहुरंगी चित्रमय प्रस्तुति जिसमें विवेकानंद जी की इस महान शिष्या के जीवन के विभिन्न प्रेरक पक्षों को सरल भाषा में संजोया गया है।

प्रकाशन –विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, संस्कृति भवन, सालारपुर रोड़, कुरुक्षेत्र १३६११८ (हरियाणा)

मूल्य ५०/-

बातों बातों में– सुप्रसिद्ध विज्ञान लेखक श्री अमरेन्द्र कुमार सिंह द्वारा विज्ञान के सिद्धांतों को कहानियों के माध्यम से आत्यंत सरल रोचक और बोधपूर्ण बनाने वाली वैज्ञानिक सिद्धांतों की प्रमाणिकता युक्त कहानियाँ।

प्रकाशन –बाल साहित्य संस्थान, दरबारी नगर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सौद्धेश्य रचित बाल कविता संग्रह 'बापू से सीखें' का विमोचन

कुरुक्षेत्र। विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित २३ से २५ नवम्बर २०१८ तक चलने वाले त्रिदिवसीय संस्कृति महोत्सव के दौरान समारोप सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिमाचल प्रदेश के महामहिम आचार्य देवव्रत जी द्वारा महात्मा गांधी के जन्म के १५०वें वर्ष पर संस्थान से प्रकाशित डॉ. वेदमित्र शुक्ल का बाल कविता संग्रह **'बापू की सीखें'** का विमोचन किया गया। ज्ञात हो कि अगस्त २०१७ में संयुक्त रूप से बाल साहित्य सृजनपीठ व संस्कृति शिक्षा संस्थान के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला के दौरान आमंत्रित सौद्धेश्य रचित बाल साहित्य में से चयनित पाण्डुलिपि में से यह एक है।

इस दौरान उल्लेखनीय कार्य करने वाले संस्थान से जुड़े शिक्षकों और विद्यार्थियों को भी राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में थानेसर से विधायक श्री सुभाष सुधा, विद्याभारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, संगठन सचिव श्री श्रीराम आरावकर, महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी, सचिव श्री अवनीश भटनागर, निदेशक डॉ रामेन्द्र सिंह, सुश्री सविता सेठ, श्री विजय कुलकर्णी, श्री कौशलेश उपाध्याय सहित पूरे देश से आए हुए प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आओ जरा हँस लें

बाल प्रस्तुति : कु. निष्णा बनर्जी

महात्मा गांधी

गांधी जी अत्यंत दुर्बल शरीर के थे। इसके विपरीत उत्तर प्रदशे की राज्यपाल सरोजिनी नायडू अत्यंत रूथल शरीर वाली महिला थी। एक दिन लंगोटधारी नंगे बदन गाँधी जी को चरखा कातते देखकर सारोजिनी नायडू ने मुस्कुरा कर कहा– ''बापू यदि कोई विदेशी तुम्हें देखे तो वह यह समझेगा कि भारतवर्ष में भुखमरी व अकाल पड़ा है।

''और तुम्हें देख वे समझ जायेंगे कि इस भुखमरी और अकाल का कारण केवल तुम हो तुम।'' बापू ने अपने चरखे में नई पोनी जोड़ते हुए कहकहा लगाया।

कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर आम के बड़े शौकीन थे। गर्मी के दिन थे। रवीन्द्रनाथ उस समय अपनी चीन यात्रा पर थे। उन्हें एक पत्र फिलीपाईन के मित्र द्वारा भेजा गया जिसमें मित्र ने कुछ आम भेजने की बात लिखी थी।

बड़ी प्रतीक्षा के बाद आम की टोकरी आ गई। कवि ने चुनकर एक बड़ा सा आम लिया और काटने के लिए चाकू निकाला। पर वे उस आम को काटने में असमर्थ रहे, तब वे घुटने टेक कर उस आम के सामने बैठ गए।

किसी आगन्तुक ने आश्चर्य से पूछा– ''गुरुदवे यह आप क्या कर रहे है? ''इस आम में मेरी दाढ़ी के बालों से भी ज्यादा लंबे रेशे हैं, इस नाते यह आम मेरा बड़ा भाई है। इसीलिए मैं इसे प्रणाम कर रहा हूँ।'' कवि ने छूटते ही उत्तर दिया।

– नागपुर (महा.)

परशुराम शुक्ल को राष्ट्रीय सम्मान

भोपाल। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा आयोजित पृथ्वी विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना २०१६ में भोपाल के वरिष्ठ बाल साहित्यकार परशुराम शुक्ल के विश्वकोश 'जलीय स्तनपायी कोश' का द्वितीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया है। संजय प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा इसका प्रकाशन वर्ष २०१५ में किया गया था।

परशुराम शुक्ल की अभी तक दो सौ पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें दस विश्वकोश हैं। श्री शुक्ल के बाल साहित्य पर विश्व भारती (शांति निकेतन) जीवाजी विश्वविद्यालय, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, अमरावती विश्वविद्यालय सहित अनेक विश्वविद्यालयों में पी-एच.डी. हो चुकीं है तथा अनेक विश्वविद्यालयों में शोधकार्य चल रहा है। उनकी अनेक बाल कविताएँ, बाल कहानियाँ, बालोपयोगी आलेख आदि कक्षा एक से कक्षा दस तक की विभिन्न राज्यों की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व सन् २०१५ में श्री शुक्ल को उनकी पुस्तक भारत के राजकीय प्रतीक पर मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक लाख रूपये का राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार मिल चुका है।

हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य सम्मान के लिए रावेन्द्र कुमार रवि का चयन

खटीमा। भारत में बाल साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य पुरस्कार के लिए इस वर्ष रावेन्द्रकुमार रवि का चयन किया गया है। यह पुरस्कार राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित उनकी पुस्तक 'वृत्तों की दुनिया' के लिए दिया जा रहा है।

बाल दिवस पर हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य न्यास द्वारा यह घोषणा की गई कि एक समारोह आयोजित कर उन्हें पुरस्कार स्वरूप रु. ७५ हजार की धनराशि और सम्मान पत्र दिया जाएगा।

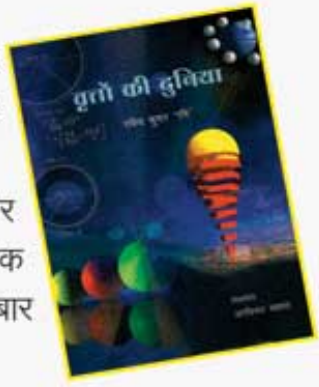

इससे पहले इग्नू से हिन्दी में सर्जनात्मक लेखन में डिप्लोमा के ऑल इंडिया टॉपर होने के फलस्वरूप भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा उन्हें स्वर्ण पदक से विभूषित किया जा चुका है। वे नेपाल के प्रधानमंत्री द्वारा भी सम्मानित हैं। उन्हें दो बार उत्तरांचल टेक्नोलॉजी टीचर ऑफ द इयर अवार्ड मिल चुका है।

बताओ तो जानें

● राजेश गुजर

मोहन, सोहन और रोहन ने साथ में पतंगें उड़ाई, इनमें से किसी एक की पतंग की डोर जुड़ेगी। बाकी दोनों की पतंग कट गई, बताओ किसकी पतंग जुड़ेगी।

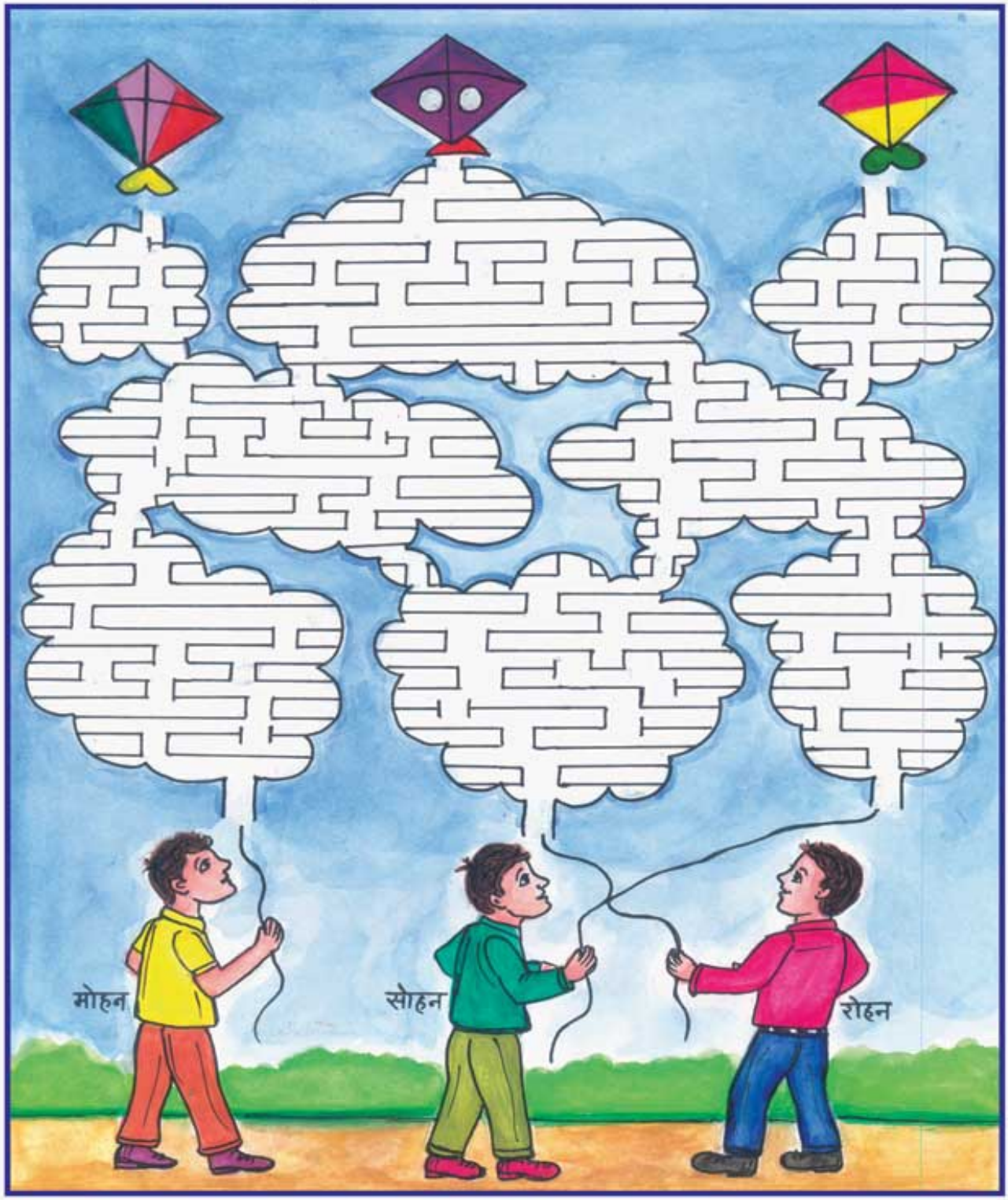

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

संघ/समिति के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरुणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में Cadres का इंटरव्यू होगा–

1. Graduate Management Trainee (GMT)

योग्यता–2019 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया / बहन आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। साथ ही 3000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 6000/-, 12वीं में 7000/- Graduation 1st year में 9000/-, IInd Year में 10500/-, IIIrd Year में 12000/-, MBA/MCA 1st Year में 15000/-, MBA/MCA IInd Year में 20000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 30000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

2. Assistant Staff Cadre (ASC)

योग्यता– 2019 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया / बहन आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT / PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा फ्री भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT / PCT के दौरान Stipend - 1st year : 7,000/- प्रतिमाह व आवास, IInd year : 8,500/- प्रतिमाह व आवास, 3rd year : 10,000/- प्रतिमाह व आवास। After training 13,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

3. Post Graduate Management Trainee (PGMT)

योग्यता–2019 में ग्रेजुएशन कर चुके भैया / बहन आवेदन कर सकते हैं। ग्रेजुएशन में न्यूनतम अंक 65% प्राप्त किए हों। आयु : 21 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद ... साल की On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ (MBA, PG in Mass Communication) करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 3 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा फ्री रहेगी। इस दौरान आवास तथा पढ़ाई के अलावा Post Graduation 1st year में 12,000/-, IInd Year में 18,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। Post Graduation पूरा करने के बाद 25,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

(आवेदन अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

(..... पद के लिए आवेदन)

Affix latest Photograph here

पूरा नाम ..... जन्मतिथि (अंको में) .....

पिता का नाम .....

पिता का व्यवसाय ..... मासिक आय .....

भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं..... जाति ..... वर्ग .....

विवाहित / अविवाहित .....

पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें) .....

पत्र व्यवहार का पता ..... पिन कोड ..... टेलीफोन नं॰ ..... Mobile No. ..... Email .....

NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC (कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें) ..... शिविर में दायित्व .....

सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे ..... दायित्व .....

सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो! नाम एवं विभाग .....

सूर्या फाउण्डेशन के इंटरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम .....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

सूर्या फाउण्डेशन, बी-3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063

आवेदन विज्ञापन छपने के एक माह के भीतर करें

म.प्र. का नं.-1 संस्थान
AN ISO 9001:2015 Certified Academy
फोर्स
DEFENCE ACADEMY
INDORE
Army
Navy
Airforce
NDA
CDS
AFCAT
SSB
MNS
BSF, CRPF
MP POLICE
Priyanshu Tiwari
Navy 2018
DHARMENDRA PARMAR
AIR-FORCE
TUSHAR VERMA
RECOMMENDED- NDA 2018
All India 17th Rank in TES
JAYESH PATEL
Joined NDA 2018
SARTHAK VYAS
Recommended TES-2018
Physical
Written & SSB
Force Defence Academy has been the pioneer in placing large number of aspirants in Airforce, Navy, Army & NDA since its Establishment in 2015. Within the short span of time, the academy has proved its mettle in imparting specialized and intensive training in academic, physical, extra and co-curricular activities for all-round excellence of the student.
NDA चयनित विद्यार्थी जयेश पटेल को बाईक की चाबी भेंट करते हुए परमवीर चक्र ब्रिगेडियर श्री योगेन्द्रसिंह यादव
9th 10th 11th & 12th के साथ NDA की तैयारी करें और Army, Navy एवं Airforce में ऑफिसर बनें।
संस्थान का स्वयं का हॉस्टल
डिफेंस फोर्सेस की तैयारी हेतु सर्वश्रेष्ठ संस्थान कर्नल मनोज बर्मन सर के मार्गदर्शन में SSB Interview की तैयारी करें एवं सेना में अधिकारी बने ...
पेट्रोल पम्प के सामने, सेन्ट्रल बैंक के उपर, साजन नगर, नवलखा, इन्दौर
Call : 98260-49151, 9691837948
Email : forcedefenceacademy@gmail.com
www.forceacademyindore.com
कर्नल मनोज़ बर्मन सर

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० | प्रेषण तिथि: ३० दिसम्बर, २०१८ आर.एम.एस., इन्दौर | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना